ISSN 2231-2552
SLRF Impact Factor 2.360

अधिकार

(विधि, मानवाधिकार, साहित्य, समाज एवं विज्ञान को समर्पित मासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

ADHIKAR

An International Refereed & Peer-Reviewed Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

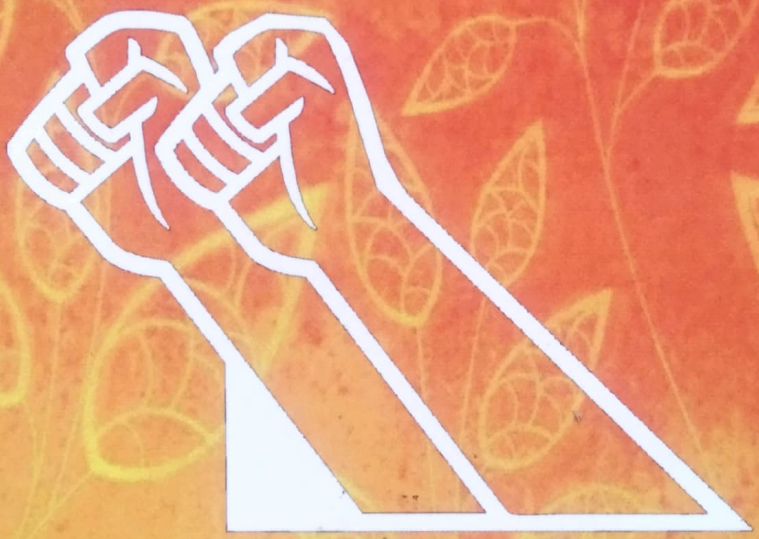

Adhikar

प्रधान संपादक
डॉ० मुकेश कुमार मालवीय
E-Mail: adhikara2z@gmail.com

UGC Approved No.45496, SLRF Impact Factor: 2.360, ISSN 2231-2552

अधिकार

(विधि, मानवाधिकार, साहित्य, समाज एवं विज्ञान को समर्पित मासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध–पत्रिका)

ADHIKAR

An International Research Journal Related to Higher Education for all Subject

प्रधान संपादक
मुकेश कुमार मालवीय
(सहायक प्राध्यापक)
विधि–संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ0प्र0)
संपर्क–08004851126

संपादक एवं समन्वयक
ओमकार प्रसाद मालवीय
राकेश कुमार मालवीय

कार्यकारी संपादक
डॉ. रजनीश कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक विधि–संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी

संपादकीय
ओमकार प्रसाद मालवीय
(संपादक एवं समन्वयक)
अधिकार शोध–पत्रिका
मुकाम पोस्ट–चाँद, तहसील–चौरई
जिला– छिन्दवाड़ा (म.प्र0) 480110

संरक्षक
प्रो. (डॉ.) निशा दुबे
कुलपति, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
प्रो. बी. सी. निर्मल
विधि–संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

संपादक मण्डल
प्रो. तिकाशा शोबा
मानवाधिकार संगठन, काठमांडू नेपाल
प्रो. सरोज बिल्लोरे
राजनीति–विज्ञान विभाग, ओल्ड जी.डी.सी., इंदौर
डॉ. लोयला टॉय
स्पेस साइन्स, जर्मनी
डॉ. मोना पुरोहित (विभागाध्यक्ष)
विधि–विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
डॉ. जे.के. जैन (पूर्व प्राचार्य)
शासकीय नवीन विधि महाविद्यालय, इंदौर
डॉ. अजेन्द्र श्रीवास्तव
विधि–संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. एस. के. तिवारी
एकेडेमिक स्टॉफ कॉलेज, बी.एच.यू. वाराणसी
डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव (रीडर)
हिन्दी डॉ.शकुन्तला मिश्रा पुनर्वास वि.वि.,लखनऊ

शोधपत्र भेजने हेतु नियमः–शोधपत्र हिन्दी या अंग्रेजी भाषा में **E-mail:adhikara2z@gmail.com** पर भेज सकते हैं। हिन्दी, कृतिदेव–10 में तथा अंग्रेजी, न्यू-रोमन में होना चाहिए। शोधपत्र सारगर्भित अधिकतम शब्द सीमा 2500 शब्द या लगभग 10 पेज में होना चाहिए। शोधपत्र के अन्त में शोधार्थी का नाम, मोबाईल नं0, ई–मेल सहित पूरा पता लिखा होना चाहिए। सहयोग राशि प्रत्येक शोधपत्र के लिए **SBI DD 1500/–Mukesh Kumar Malviya,Varanasi"** के नाम से बनवायें। अधिक जानकारी के लिए प्रधान संपादक से संपर्क करें।

शर्तेः–1.शोध–पत्रिका में समस्त पद अवैतनिक हैं। सभी रचनाओं एवं शोधों में विचार लेखकों के हैं; अतः उनके विचार से संपादक मंडल या शोध–पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस शोध–पत्रिका के प्रकाशन, संपादन, एवं मुद्रण में पूर्णतः सावधानी बरती गई है। किसी भी प्रकार की त्रुटि महज मानवीय भूल मानी जाये। त्रुटि हेतु संपादक, मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे। किसी भी विवाद का क्षेत्राधिकार न्यायालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) होगा।

2.स्वत्वाधिकारी, मुद्रण, प्रकाशन, संपादक द्वारा चाँद, जिला–छिन्दवाड़ा से प्रकाशित एवं सूर्या बुक एण्ड फार्म कम्प्यूटर सेन्टर, लंका, बी0एच0यू0, वाराणसी से मुद्रित।

CONTENTS

1.	DOMESTIC VIOLENCE IN INDIA: AN OVERVIEW ***Manju Arya**	1–6
2.	Corporate Social Responsibility in India ***Dr. Krishna Mukund**	7–13
3.	भारत में डॉ0 अम्बेडकर का अनुसूचित जाति सशक्तीकरण और अस्पृश्यता की समस्या पर–सामाजिक न्याय अनुप्रयोग ***डा0 अमिता रानी**	14–20
4.	भारतीय मध्यमवर्गीय हिन्दू पारम्परिक परिवारों पर आधुनिकता का प्रभाव ***डा0 आनन्द तनुजा**	21–26
5.	झारखण्ड के मुण्डा जनजाति पर आधुनिकीकरण का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। (राँची नगर के संदर्भ में) ***डॉ0 गंगा केवट**	27–30
6.	गाँधी दर्शन की प्रमुख विशेषताऐं ***वीणा शुक्ला**	31–33
7.	कोशी क्षेत्र में बाढ़ की समस्या एवं बाँध निर्माण : ''एक ऐतिहासिक अध्ययन'' ***मो0 रफत परवेज**	34–36
8.	रेणु की कहानियों में लोक–संस्कृति ***डॉ0 चन्दन कुमार सिंह**	37–38
9.	Child Labour and its Socio - Economic Determinants: A Case Study of Nalanda District ***Prativa Kumari**	39–46
10.	बदलते शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षकों की भूमिका ***डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे**	47–49

बदलते शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षकों की भूमिका

*डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बी०एड० विभाग कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के, जौनपुर

प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षक की कल्पना चिन्तन करने के बजाय, चिन्तित रहने वाले एक मनुष्य के रूप में की जा सकती है। अधिकांश अभिभावकों को लगता है कि उनके बच्चों को पढ़ाने की पूरी जिम्मेदारी शिक्षकों की ही है। सरकारी विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षक यह महसूस करते हैं कि इन विद्यार्थियों के अभिभावक अपने बच्चों पर तनिक भी ध्यान नहीं देते हैं जबकि निजी विद्यालयों के शिक्षकों के ऊपर बेहतर प्रदर्शन करने का दबाव होता है। निजी विद्यालयों के शिक्षकों को कम वेतन मिलने के कारण तनावपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड रहा है। शिक्षक एक ऐसा सामाजिक प्राणी है जो शैक्षिक प्रशासन के भय युक्त वातावरण में जीता है और विद्यालय में बच्चों के लिए 'भयमुक्त माहौल' बनाने का रचनात्मक काम करता है। वह विद्यार्थियों को सवाल पूछने और जबाब देने के लिए प्रेरित करता है। अध्यापकों को कई अवसरों पर अधिकारियों की फटकार, अभिभावकों द्वारा दुर्व्यवहार एवं छात्रों के अनुशासनहीनता का शिकार होना पड़ता है। वह शिक्षाविदों की बुनी भूलभुलैया की प्रयोगशाला में लम्बे समय से अपने धैर्य की परीक्षा दे रहा है। बच्चों को अपने सामने परीक्षा से भयमुक्त और पढ़ाई की जिम्मेदारी से मुक्त होते हुए देख रहा है। उसे बच्चों को शिक्षा बिना किसी दण्ड एवं दबाव के देना हैं। विद्यार्थियों को भी इस बात की जानकारी रहती है कि हम कितना भी शरारत करेंगे, शिक्षक हमें दण्ड नहीं देंगे परिणामस्वरूप अधिकांश विद्यालयों में अनुशासनहीनता देखने को मिल रही है।

महिला शिक्षकों की भी अपनी समस्यायें हैं। उन पर घर की तमाम जिम्मेदारियों के कारण उनको खुद पढने का समय नहीं मिल पाता। नये ज्ञान की अपूर्णता के कारण उनमें कक्षा में अच्छा प्रदर्शन का अभाव रहता है जिसके कारण वे तनावग्रस्त रहती हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आज शिक्षा के बदलते स्वरूप और भारतीय शिक्षा प्रणाली को देखते हुए इस पर गम्भीर विचार–विमर्श की आवश्यकता है कि शिक्षा क्या है और वह कौन सा परिवेश है जिसमें शिक्षा बदल रही है। शिक्षा के इस बदलते परिवेा में शिक्षकों के क्या कर्त्तव्य होने चाहिए। देखा जाय तो जैसे ही मनुष्य अपनी प्राकृतिक अवस्था से निकलकर सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में संगठित हुआ, शिक्षा उसका अभिन्न अंग बन गई। प्रारम्भिक अवस्था में जहाँ मनुष्यों की प्रमुख आवश्यकता भूख मिटाना, अपने जीवन की रक्षा करना तथा इस दुनिया के बारे में जानकारी प्राप्त करना था। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो हमारे मन में ज्ञान के प्रति अनुराग उत्पन्न करे। शिक्षा मानसिक तथा शारीरिक समस्याओं को दूर रखने के साथ–साथ आध्यात्मिक पूर्णता भी प्रदान करती हैं। यह जीवन में सन्तोष और स्थिरता को जन्म देती है। साथ ही व्यक्ति को नवीनीकृत करते हुए उसे भविष्यद्रष्टा, समकालीन और नए विचारों से परिपूर्ण भी करती है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में प्राचीन शिक्षा प्रणाली से अत्यधिक परिवर्तन परिलक्षित होता है। शिक्षा में इतनी विषमता पहले कभी नहीं थी जितनी उदारीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में दिखती है। एक तरफ कुछ विद्यालय बहुत महंगे है तथा दूसरी ओर अधिकतर ऐसे विद्यालय है जहाँ न पर्याप्त बुनियादी सुविधाएं हैं, न विद्यार्थियों के अनुपात में शिक्षक। व्यावसायिक पाठ्यक्रम वाले कालेजों में नामांकन को लेकर मारामारी मची रहती है क्योंकि इन पाठ्यक्रमों से अच्छे कैरियर का रास्ता खुलता है। इन कॉलेजों में प्रवेश पाना पैसे की ताकत पर निर्भर करता है। इन परिस्थितियों ने समाज को प्रभावित करना और बदलना शुरू कर दिया। नब्बे के दशक में लागू की गई आर्थिक नीतियों के कारण स्वयं को कई जिम्मेदारियों से मुक्त करना शुरू कर दिया और राज्य के द्वारा संचालित अनेक क्षेत्रों को बाजार के हवाले कर दिया। परिणामस्वरूप, शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण की बाढ़ सी आ गई। बड़े शहरों से लेकर छोटे कस्बों और गाँवों तक प्राइवेट विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की भरमार हो गई। शिक्षा अब सरकारी नीतियों से तय न होकर बाजार के नियमों से संचालित होने लगी। आज के दौर में शिक्षकों का कर्त्तव्य और बढ़ गया है। उपरोक्त परिस्थितियों को देखते हुए प्रस्तुत अध्ययन समीचीन एवं प्रासंगिक है।

अध्ययन का उद्देश्यः प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।
2. विद्यालय के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।
3. समाज के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।
4. ज्ञान परम्परा एवं उसके मूल्य–मर्यादाओं के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।

1. विद्यार्थियों के प्रति कर्त्तव्य

शिक्षक का प्रथम कर्त्तव्य विद्यार्थियों को सुशिक्षित करना है। सुशिक्षा का प्रमुख स्तर है पाठ्य–विषय का समुचित ज्ञान कराना, यानी उन्हें विषयवस्तु के तथ्यों, संकल्पनाओं, परिभाषाओं, सिद्धान्तों आदि की सम्यक जानकारी देना तथा समझदारी विकसित करना। आज प्रायः हम जानकारी के स्तर से ऊपर नहीं उठ पाते। समझदारी विकसित करने में शिक्षक

की रूचि कम होती है और विद्यार्थी की तो उससे भी कम। विद्यार्थी तो केवल परीक्षा में अच्छा अंक प्राप्त करना चाहता है उसका काम केबल जानकारी से ही चल जाता है। परीक्षा में प्रश्न भी केवल जानकारी से ही सम्बन्धित पूछे जाते है समझदारी के क्षेत्र से नहीं। शिक्षक का प्रमुख कर्त्तव्य है–विद्यार्थी को अपने विषय का 'विद्वान' बना देना। ऐसी विद्वता तब आती है जब विद्यार्थी में जानकारी और समझदारी से भी आगे बढ़कर समालोचनात्मक और विवेचनात्मक क्षमता विकसित होती है। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी को स्वतंत्र अध्ययन, चिंतन, मनन के लिए प्रेरित किया जाय। उसके सामने चुनौतीपूर्ण प्रश्न रखे जाय, और उसे स्वतंत्र लेखन के लिए प्रोत्साहित किया जाय। इस प्रयास में वह ज्ञानार्जन के साथ–साथ ज्ञान सृजन में भी सक्षम हो पाएगा। विद्यार्थी को इस स्तर तक ले आ देना जहाँ वह स्वप्रयास से ही ज्ञानार्जन और ज्ञानसृजन के मार्ग पर आगे बढ सके, यही सुशिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है। विद्यार्थी के मन में विद्यार्जन के प्रति ऐसी ललक पैदा कर देना तभी संभव होगा जब स्वयं शिक्षक के मन में भी ज्ञान के प्रति वही उत्साह और निष्ठा हो। एक अच्छा शिक्षक जीवन पर्यन्त विद्यार्थी होता है। कहा भी गया है कि एक जलता हुआ दीपक ही दूसरे दीपक को प्रज्वलित कर सकता है।

किसी एक विषय का भलीभांति ज्ञान प्रदान करके विद्यार्थी को उस विषय में पारंगत बना देना शिक्षा व्यवस्था और शिक्षक के दायित्व का एक स्तर है। पर इस प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता का विकास करना उसका उच्चतर स्तर है। समय के साथ विषय–विशेष का ज्ञान तो बदलता रहता है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि के क्षेत्र में यह परिवर्तन अधिक गतिमान होता है। आज का सीखा हुआ ज्ञान कुछ ही वर्षों में अप्रासंगिक हो जाता है। पर बौद्धिक कौशल जीवन पर्यन्त हमारा साथ देता है। इसके सहारे हम किसी भी नए विषय का ज्ञान अर्जित कर सकते है। केवल ज्ञान और विद्या के क्षेत्र में ही नहीं, विकसित बुद्धि वाले लोग जीवन के किसी भी क्षेत्र में सामने आने वाली समस्यायों का सही विश्लेषण कर सकते हैं, उनका समुचित समाधान ढूंढ सकते हैं, और भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकते है। ऐसे बुद्धिमान, सुयोग्य और सक्षम व्यक्तियों का निर्माण करना ही उच्च शिक्षा के गुणवत्ता की सच्ची कसौटी है। बौद्धिक विकास के साथ–साथ विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण करना तथा उनकी सामाजिक, नैतिक चेतना का विकास करना शिक्षकों के दायित्वों का एक प्रमुख आयाम है। विश्वविद्यालयों से उच्च शिक्षाप्राप्त विज्ञजनों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने ज्ञान और कौशल द्वारा समाज का हित करेंगे, उसके उत्थान में सहायक होंगे। पर सामाजिक–नैतिक चेतना के अभाव में वे केवल अपनी व्यक्तिगत स्वार्थसिद्धि के प्रति ही सचेष्ट रहते है। ऐसे स्वार्थ प्रेरित और स्वकेन्द्रित लोग देश को, समाज को कुछ दे नहीं पाते। उल्टे अपनी बौद्धिक क्षमता और चतुराई से समाज का शोषण ही अधिक करते हैं। अपनी स्वार्थ–सिद्धि के लिए वे समाज का अहित करने में भी कोई संकोच नहीं करते।

2. विद्यालय के प्रति कर्त्तव्य

शिक्षक विद्यालय का वेतन भोगी कर्मचारी होता है। विद्यालय उसे आजीविका देती है साथ ही एक उच्च स्तर का सामाजिक दर्जा भी देती है। विद्यालय का शिक्षक होने के कारण ही उसे सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती है। अतः यह अपेक्षित है कि उसके मन में अपनी संस्था के प्रति कृतज्ञता का भाव हो। इस भाव से प्रेरित व्यक्ति निष्ठापूर्वक संस्था की सेवा करेगा, उसके उद्देश्यों को आगे बढ़ायेगा और संस्था के उत्थान में अपना पूर्ण योगदान करेगा। इस सेवाभाव और निष्ठाभाव से प्रेरित शिक्षक संस्था के हित को अपने हित के ऊपर रखेगा। कोई भी ऐसा काम नहीं करेगा जिससे संस्था की गरिमा को आंच आती हो। संस्था के प्रति कर्त्तव्यों का दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु है, अनुशासन। संस्था द्वारा निर्दिष्ट और अपेक्षित सभी कामों को पूरी लगन और ईमानदारी से करना शिक्षक का नैतिक कर्त्तव्य है। इन कामों में शैक्षणिक और शिक्षणेतर दोनों तरह के काम शामिल होते हैं। प्रत्येक संस्था के अपने नियम–कानून, काम करने के तौर–तरीके होते हैं। संस्था आशा करती है कि उसके कर्मचारियों का आचरण इनके अनुरूप होगा। इसी प्रकार संस्था के कर्मचारियों, अधिकारियों और शिक्षकों में छोटे–बड़े का एक पदानुक्रम होता है। इसकी मर्यादाओं का अनुपालन करना भी शिक्षकों का कर्त्तव्य होता है। यह उनके हित में भी है क्योंकि आज जो कनिष्ठ है कल वही वरिष्ठ होगा। जो अपने से वरिष्ठ जनों को सम्मान देता है, वही आगे चलकर अपने से कनिष्ठ लोगों का सम्मान पाता है।

3. समाज के प्रति कर्त्तव्य

विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था एक सामाजिक संरचना है। इसे समाज ने अपनी कुछ महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थापित किया है। इसमें प्रमुख हैं, समाजतंत्र को सुचारू रूप से चलाते रहने के लिए विभिन्न प्रकार के ज्ञान–कौशल से युक्त व्यक्तियों का सृजन करना, ऐसे लोगों को तैयार करना जो सामाजिक–आर्थिक विकास को आगे बढ़ा सकें, उसे अधिक गतिमान बना सकें, और इसमें आने वाले नयी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकें। इसके लिए आवश्यक है कि विश्वविद्यालय से निकले उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों की बौधिक क्षमता एवं कार्यकुशलता के साथ–साथ सामाजिक–चेतना भी विकसित हो, वे समाज को अपना समझें, अपने सामाजिक दायित्वों को जाने और स्वीकार करें और जिनके मन में अपने ज्ञान–कौशल से एक बेहतर समाज बनाने का उत्साह हो। ऐसे उच्चकोटि के प्रबुद्ध, सक्षम और संवेदनशील 'मानव संसाधन' का विकास करना विश्वविद्यालय और उसके शिक्षकों का प्रमुख सामाजिक दायित्व है। सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से यह आवश्यक है कि विश्वविद्यालय में पठन–पाठन के विषय और शोध कार्य हमारे अपने समाज की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को ध्यान में रखकर तय किए जाये। वैसे तो ज्ञान–विज्ञान का एक बड़ा भाग सार्वभौमिक

होता है पर उसमें बहुत कुछ ऐसा भी होता है जो हर समाज अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करता है। नयी पीढ़ी को देने के लिए इस विशाल ज्ञान भण्डार से क्या चयनित किया जाता है और उन्हें किस रूप में प्रस्तुत किया जाता है यह भी देश–काल में मान्य सामाजिक–सांस्कृतिक दर्शन से प्रभावित होता है। शिक्षकों का एक अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक कर्त्तव्य सामाजिक गतिविधियों की निष्पक्ष, नीतिसम्मत और विवेकपूर्ण समालोचना करना है। अपने ज्ञान और तर्कशक्ति के द्वारा वे इन गतिविधियों के कारकों को, उनके छिपे हुए पहलुओं को और उनके दूरगामी परिणामों को देख–समझ सकते हैं और उन्हें उजागर कर सकते हैं। आज के जटिल समाज में प्राय: आर्थिक और राजनैतिक शक्तियाँ अपने निहितार्थ को पूरा करने के लिए लोक–लुभावने नारों और कार्यक्रमों से सामान्य जनता को भ्रमित करने का प्रयास करती रहती हैं। इनसे जनता को आगाह करना और लोकहित के सजग प्रहरी के रूप में काम करना भी प्रबुद्धजन का दायित्व है। लोकतंत्र की सफलता के लिए बुद्धिजीवियों द्वारा सामाजिक समालोचना का यह दायित्व निभाना नितांत आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक है कि विद्वानों और शिक्षकों की योग्यता एवं निष्पक्षता में सामान्यजन का विश्वास हो।

4. ज्ञान परम्परा एवं उसके मूल्य–मर्यादाओं के प्रति कर्त्तव्य

मानव सभ्यता के विकास क्रम में सृजित ज्ञान के विशाल ज्ञानकोष के संरक्षक और संवाहक विश्वविद्यालय के विद्वान शिक्षक ही हैं। इस कोष को अक्षुण्ण बनाये रखना, इसकी अभिवृद्धि करना, उसे नयी धाराओं, उपधाराओं में प्रवाहित करना और उसकी गरिमा को बनाये रखना शिक्षकों का परम धर्म है। अपनी वृत्ति को इस परम्परा के प्रति समर्पण के पवित्र भाव से देखने में, और उसे केवल जीविकोपार्जन का माध्यम के रूप में देखने में जमीन–आसमान का अंतर है। ज्ञान–परम्परा के अपने विशिष्ट और उत्कृष्ट मूल्य हैं। इन मूल्यों के अनुरूप आचरण करना सभी विद्वानों, शिक्षकों एवं शोधकर्ताओं का दायित्व है।

ज्ञान परम्परा का पहला मूल्य है–बौद्धिक ईमानदारी। इस मूल्य के कई भाव हैं। इनमें एक है, किसी भी ज्ञान, विचार अथवा सिद्धान्त की प्रामाणिकता को सुनिश्चित करके, उसे भली–भांति सत्यापित करके ही उसका प्रतिपादन करना। तथ्यों से छेड़छाड़ करना, अपने अनुकूल तथ्यों को चुनना और अन्य की जानबूझ कर अनदेखी कर देना, बौद्धिक बेईमानी है। बौद्धिक ईमानदारी से ही मिलता–जुलता ज्ञान परम्परा का एक दूसरा मूल्य है, बौद्धिक और वैचारिक खुलापन। एक ही विषय पर दृष्टि–भेद के कारण अलग–अलग विद्वानों के मत भिन्न होते हैं। अपने विचारों से भिन्न विचारों को भी उचित आदर और महत्व देना एक अच्छे विद्वान का लक्षण है। अपने किसी विचार या शोध में त्रुटि सिद्ध हो जाने पर, या उससे बेहतर विचार सामने आ जाने पर, अपनी गलती या कमी को सहर्ष और शालीनतापूर्वक स्वीकार कर लेना, वैचारिक खुलापन है। विद्या और ज्ञान निरंतर गतिमान धारा की भांति होते हैं। पुराने और स्थापित सिद्धान्त, विचार, मत, शास्त्र संशोधित होते रहते हैं एवं परिवर्तित होते रहते हैं।

विद्या से परिष्कृत व्यक्तित्व का एक प्रमुख गुण है–विनम्रता। संस्कृत का प्रसिद्ध नीति–वाक्य है:

विद्या ददाति विनयम्। विद्यया न प्रमदितव्यम्।

अपने ज्ञान का अहंकार विद्वानों का सबसे बड़ा दुर्गुण और शत्रु है। ऐसे अहंवादी जन आत्मप्रशंसा और आत्मतुष्टि में ही निमग्न रह जाते हैं। अपने को सर्वज्ञ मानकर दूसरों को अपने से तुच्छ समझने लगते हैं। वास्तविक विद्या प्रेमी वह है जो विद्यार्थी भाव से सदैव और सबसे सीखता रहता है और अपने ज्ञान–भंडार की अभिवृद्धि करता रहता है। सभी बड़े विद्वानों के व्यक्तित्व में विनम्रता का भाव परिलक्षित होता है।

निष्कर्ष–बदलते शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आज निःसन्देह शिक्षा के क्षेत्र में विषमतायें बढ़ी है। छात्र अनुशासनहीन होते जा रहे हैं। पाठ्यक्रम में जटिलता आ रही है, प्रशासन एवं प्रबन्धक के प्रति जबाबदेही भी बढ़ती जा रही हैं। ऐसी परिस्थिति में यदि शिक्षक अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन ईमानदारीपूर्वक करता रहे तो निश्चित रूप से अनेक जटिलताओं के बावजूद भी शिक्षा व्यवस्था उत्तम स्तर की हो जायेगी तथा विद्यार्थी भी पठन–पाठन में पूर्णरूप से रूचि लेने लगेंगे। इसके लिए शिक्षक द्वारा उपरोक्त सभी क्षेत्रों में कर्त्तव्यों का निर्वहन करना होगा। शिक्षक सर्वप्रथम अपने विद्यार्थियों के प्रति कर्त्तव्य का निर्वहन करें जिससे छात्र रूचिपूर्वक विषयवस्तु का गहनता से अध्ययन करें एवं ज्ञान के साथ–साथ समझ भी विकसित कर सके। विद्यालय, समाज, ज्ञान परम्परा और उसकी मूल्य–मर्यादाओं के प्रति कर्त्तव्यों के निर्वहन से शिक्षक अपने योग्यता एवं निपुणता से आपस में सभी लोगों के साथ अन्तर्क्रिया द्वारा एक स्वस्थ शैक्षिक वातावरण का निर्माण करने में सफल हो सकेंगे।

सन्दर्भ

1,अग्निहोत्री, रवीन्द्र (1973) : 'भारतीय शिक्षा : दशा तथा दिशा' केदारनाथ–रामनाथ एण्ड कम्पनी मेरठ। 2,घनकर, रोहित (2004):'शिक्षा और समझ' आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला, हरियाणा। 3,पाण्डेय, रामशकल (1983):'शिक्षा दर्शन' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा। 4,पाण्डेय, रामशकल (2003):'उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा। 5,पाण्डेय, रामशकल (2005):'शैक्षिक निबन्ध' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा। 6,जर्नल :'शैक्षिक परिसंबाद' Vol. 2, No. 2 जुलाई 2012 काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी। 7,Website : www. educationmirror.org 8,www. jansatta.com

ISSN 2249-605X
SLRF Impect Factor 2.361

15 Days

An International Refereed & Peer-Reviewed Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

प्रधान संपादक
डॉ० मुकेश कुमार मालवीय
Email - researcha2z@gmail.com
Cell: 08004851126

UGC Approved No.63423, SLRF Impact Factor: 2.361, ISSN 2249-605X

15Days

An International Research Refereed Journal Related to Higher Education for all Subject. Vol.155 Jan.2018

EDITOR IN CHIEF

MUKESH KUMAR MALVIYA
ASST. PROFESSOR
LAW SCHOOL, BHU, VARANASI (U. P.)
MO. +91-8004851126

SPECIAL MEMBER OF ADMINISTRATION

SHRI SHYAM BABU PATEL DEPUTY REGISTRAR & CAO (SSH) BANARAS HINDU UNIVERSITY VARANASI

MEMBERS OF EDITORIAL BOARD

DR. MONA PUROHIT HOD, LAW DEPARTMENT, BU, BHOPAL.
DR. ARCHANA RANKA HOD , SCHOOL OF LAW, DAVV, INDORE.
SHRI P.P.SINSH, HOD, LAW DEPARTMENT, DR.HSGVV SAGAR.
DR.AMRENDRA KUMAR MISHRA HOD, LAW DEPARTMENT, DDU GORAKHPUR.
DR. SHEPHALI YADAV HOD, LAW DEPARTMENT, MJPRV, BAREILLY.
DR. VANI BHUSHAN FORMER HOD, PG DEPARTMENT OF LAW, UNIVERSITY OF PATNA.
DR. J.K.JAIN PRINCIPAL NEW GOVT. LAW COLLEGE, INDORE.
DR. R.K. MURALI ASSO. PROFESSOR, LAW SCHOOL, BHU, VARANASI.
DR. AHMED NASEEM, ASST. PROFESSOR, LAW DEPARTMENT, DDU, GORAKHPUR.
SHRI ROSHAN LAL ASST. PROFESSOR, LAW DEPARTMENT, UNIVERSITY OF ALLAHABAD.

PATRON

PROFESSOR SUKHPAL SINGH
VICE CHANCELLOR, HIDAYATULLAH NATIONAL LAW UNIVERSITY, RAIPUR.

SPECIAL RESEARCH SCHOLARS EDI. BOARD

PRIYANKA VAIDYA ASSISTANT PROFESSOR GOVT. P. G. COLLEGE NALAGARH DISTT. SOLAN (H. P.)
SHRI RANA NAVNEET ROY JUNIOR RESEARCH FELLOW, LAW SCHOOL, BHU, VARANASI.

EDITORIAL ADVISORY BOARD

DR. SANTOSH KUMAR TIWARI ASST. PROFESSOR LAW FACULTY, NGB UNIVERSITY, ALLAHABAD.
DR. JADHAV SUNIL GULAB SINGH, ASST. PROFE, YASHVANT COLLEGE, NADED, (MH).
DR. SAMTA JAIN ASST.PROFESSOR (ECONOMICS), MATA GUJARI WOMENS COLLEGE, JABALPUR.
DR. AMIT KUMAR PANDEY HINDI DEPARTMENT, BHU VARANASI.
DR. DEEPAK SHARMA ASST. PROFESSOR PKR JAIN COLLEGE OF EDUCATION, AMBALA CITY.
DR. SHARAD DHAR SHARMA SENIER RESEARCH ASSOCIAT BHU VARANASI.
DR.SURENDRA PANDEY, DEPARTMENT OF HINDI, BHU VARANASI.
SHRI SUNIL KUMAR LAW SCHOOL, BHU, VARANASI.
SHRI DILIP KUMAR ASST. PROFESSOR, LAW FACULTY, NGB UNIVERSITY, ALLAHABAD.
KOMAL PRASAD YADAV ASST. PROFESSOR, LAW FACULTY, NGB UNIVERSITY, ALLAHABAD.
KU. ANIMA SHUKLA ANUSHRI COLLEGE OF NURSING, JABALPUR.

CONTENTS

1.	AN EXHAUSTIVE STUDY ON THE SKILL DEVELOPMENT FOR SURE SUCCESS THOUGH SELF DEVELOPMENT –A GUIDE TO ACHIEVE A DREAM JOB AND TO STRENGTHEN THE CAREER ***Prof. Dr. V. Sundaresan**	1–8
2.	THEORY OF PUNISHMENT AND SENTENCING ***Parvati Rana**	9–11
3.	Corporate Governance and Corporate Social Responsibility ***Dr. Krishna Mukund**	12–20
4.	भारत में धर्म की राजनीति ***पूजा राय**	21–25
5.	पर्यावरण एवं जनसंख्या ***नीलम कुरील**	26–28
6.	राँची नगर के उराँव जनजाति की सामाजिक–आर्थिक में परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। ***डॉ0 गंगा केवट**	29–31
7.	भारत में अनुसूचित जाति और सामाजिक न्याय की प्रासंगिकता ***डा0 अमिता रानी**	32–45
8.	भारत में परिवार के बदलते स्वरूप ***डा0 आनन्द तनुजा**	46–49
9.	राजस्थान में महिलाओं की सहभागिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा स्थिति एवं राजस्थान में सामाजिक चेतना ***डॉ. सुमित्रा देवी शर्मा**	50–56
10.	शिक्षा और समाज पर तकनीक का प्रभाव ***डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे**	57–59
11.	हिन्दुस्तानी सभ्यता –सर्वोच्च सभ्यता ***वीणा शुक्ला**	60–61

शिक्षा और समाज पर तकनीक का प्रभाव

*डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बी०एड० विभाग कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के, जौनपुर

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह प्राकृतिक शक्तियों को अपने वशीभूत करके अच्छे प्रभावों से लाभान्वित होता तथा बुरे प्रभावों से बचने का प्रयास करता रहता है। अपने इस कार्य–सिद्धि के लिए मानव ने विज्ञान का सहारा लिया है। इसी के द्वारा वह अपने जीविकोपार्जन के साधनों को नियंत्रित करता है तथा सामाजिक संबंधों और अपने बौद्धिक विकास को व्यक्त करता है। आज का वर्तमान समाज तकनीकी ज्ञान से ओत–प्रोत है। जिसका प्रभाव मनुष्य के लगभग सभी पहलुओं पर पड़ा है। यही कारण है कि आज हमारी सामाजिक व्यवस्था भी काफी हद तक बदल सी गई है। साथ ही साथ तकनीक के आ जाने से शिक्षा का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ है। जहाँ शिक्षा प्राचीन काल में केवल औपचारिक तथा अनौपचारिक रूप में प्राप्त होती थी, वहीं आज तकनीक ने एक नये विधा को जन्म दिया है जिसे निरौपचारिक शिक्षा कही जा सकती है। जो वर्तमान समय में लगभग आधी शिक्षित आबादी को अपने से जोड़ रखी है।

शिक्षा : शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ होता है।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष् धातु में 'अ' प्रत्यय लगने से बना है। जिसका अर्थ है–सीखना और सीखाना। शिक्षा को अंग्रेजी में 'एजुकेशन' शब्द से नवाजा गया है जो लैटिन भाषा के एजूकेटम (म्कनबंजपवद) शब्द से बना है। म्कनबंजपवद दो शब्दों से मिलकर बना है–

E+Duco. E का अर्थ है 'out of' और 'Duco' का अर्थ है– 'To lead forth or to extract out'। अतः एजुकेशन का अर्थ है–बच्चे की आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करना।

प्रयोग की दृष्टि से शिक्षा शब्द का प्रयोग दो रूपों में होता है–एक प्रक्रिया के रूप में और दूसरा प्रक्रिया के परिणाम रूप में। जब हम कहते है कि उसकी शिक्षा सुचारू रूप से चल रही है तो यहाँ शिक्षा शब्द का प्रयोग प्रक्रिया रूप में है और जब हम यह कहते है कि उसने शिक्षा प्राप्त किया है तो यहां शिक्षा शब्द का प्रयोग परिणाम रूप में है। शिक्षा प्रक्रिया के स्वरूप की व्याख्या करने में मुख्य भूमिका दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों, राजनीतिशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों, मनौवैज्ञानिकों और वैज्ञानिकों ने अदा की है इन सबने शिक्षा को अपने–अपने दृष्टिकोण से परखा और परिभाषित किया है।

जगतगुरू शंकराचार्य की दृष्टि से : ''सः विद्या या विमुक्तये, शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाए।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार–''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।''

महात्मा गाँधी के अनुसार–''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।''

पेस्टालॉजी के अनुसार–''शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरस और प्रगतिशील विकास है।''

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि–शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। इस प्रकार उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते हैं।

समाज (Society) : सामान्य रूप से व्यक्तियों के समूह को समाज कहते हैं। मानवशास्त्र में मनुष्यों के किसी भी समूह को समाज की संज्ञा दी जाती है। यहां तक कि आदिम मानवीय समुदाय को भी समाज कहा जाता है।

भूगोल के क्षेत्र में समान सभ्यता वाले लोगों के समुदाय को समाज कहते हैं जैसे–भारतीय समाज, यूरोपीय समाज। धर्मशास्त्र में धर्म विशेष को मानने वालो के समुदाय को समाज कहते हैं; जैसे–हिन्दू समाज, इसाई समाज, जैन समाज, बौद्ध समाज और मुसलमान समाज आदि। समाजशास्त्रीय अर्थ में व्यक्तियों के समूह को समाज नहीं कहते अपितु व्यक्तियों में पाये जाने वाले सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्था अथवा जाल को समाज कहते हैं। सभी समाजशास्त्री समाज को अमूर्त मानते हैं। इसकी कुछ प्रमुख परिभाषाएं निम्न है–

टालकॉट पार्सन्स के अनुसार :

समाज को उन मानवीय सम्बन्धों की पूर्ण जटिलता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जो साधन तथा साध्य के सम्बन्ध द्वारा क्रिया करने से उत्पन्न होते हैं। वे चाहे वास्तविक हो अथवा प्रतीकात्मक।

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार :''समाज रीतियों एवं कार्य प्रणालियों की, अधिकार तथा पारस्परिक सहयोग की, अनेक समूहों तथा विभागों की मानव व्यवहार के नियन्त्रण और स्वतन्त्रताओं की एक व्यवस्था है। इस सतत् परिवर्तनशील व्यवस्था को हम समाज कहते है।''

तकनीक (Technology) : सामान्यतः तकनीक का अर्थ उपकरणों एवं यन्त्रों से लगाया जाता है। लोगों की यह धारणा सर्वथा भ्रामक है। उपकारणों एवं यन्त्रों का प्रयोग तो मनुष्य अपनी शक्ति के द्वारा करता है। अतः तकनीक वह व्यवस्थित ज्ञान या कुशलता है, जिसकी सहायता से उपकरणों एवं यन्त्रों का प्रयोग भली–भांति किया जाता है। कार्ल मार्क्स ने कहा है– ''तकनीक मनुष्य के

द्वारा प्रकृति के साथ व्यवहार करने के प्रकार को व्यक्त करती है। यह उत्पादन की वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य अपना जीवन धारण करता है और जिसे वह अपने सामाजिक सम्बन्धो की संरचना के प्रकारों एवं उनसे उत्पन्न होने वाली बौद्धिक धारणाओं को प्रकट करता है।''

अतएव हम यह कह सकते हैं कि तकनीक वह विशेष ज्ञान है जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीविकोपार्जन, सुविधा तथा अन्य साधनों का उपकरण तथा यन्त्र के रूप में उपयोग करता है और प्राकृतिक वातावरण पर प्रभाव स्थापित करता है। इस प्रकार वह अपने बौद्धिक क्षमता को व्यक्त करता है तथा प्राकृतिक शक्तियों पर अधिकार पाता है।

हम अपने जीवन को अधिक सुखमय एवं सुविधापूर्ण बनाने के लिए ही तकनीक का प्रयोग करते हैं। आज ऐसी–ऐसी मशीनों का इजाद हो रही है जिसमें मेहनत कम लगता है, व्यय कम लगता है और परिणाम बेहतर प्राप्त होता है तथा समय की बचत के कारण अवकाश भी अधिक मिलता है।

शिक्षा पर तकनीक का प्रभाव (Impact of Technology on Education) : शिक्षा जगत में तकनीक का प्रयोग सर्वप्रथम 1926 में अमेरिका में सिडनी–एल–प्रेसी ने ओहियों राज्य विश्वविद्यालय में शिक्षण मशीन के निर्माण द्वारा आरम्भ किया। इसके पश्चात् 1930–40 के दशक में लुम्सडेन तथ ग्लेसर नामक तकनीक वेत्ताओं ने शिक्षा के यन्त्रीकरण करने का प्रयत्न किया। वर्तमान समय में अनेक प्रकार की तकनीकियों का विकास किया जा चुका है, जिनका प्रयोग शिक्षा को और अधिक सशक्त एवं प्रभावशाली बनाने में किया जा रहा है। इसी का प्रभाव है कि आज विश्व की इतनी विशालयकाय जनसंख्या को शिक्षा सुलभ हो पा रही है। तकनीक ने शिक्षा के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है चाहे वह शिक्षा का लक्ष्य हो, शिक्षण विधि हो, शिक्षण सहायक सामग्री हो या शिक्षा की गुणवत्ता हो। अतः शिक्षा पर तकनीक के कुछ प्रमुख प्रभाव इस तरह देखे गये हैं–

1. शिक्षा के लक्ष्य में परिवर्तन : प्राचीन काल में शिक्षा के जो लक्ष्य थे वे आज नही रह गये हैं। शिक्षा के लक्ष्य में आज बहुत परिवर्तन हुआ है। पहले शिक्षा का लक्ष्य आध्यात्मिक उन्नति, सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षण एवं हस्तान्तरण, मोक्ष की प्राप्ति आदि था परन्तु वर्तमान समय में शिक्षा का लक्ष्य भौतिकवादी हो गया है। वर्तमान समाज भौतिक सम्पन्नता और आध्यात्मिक विपन्नता की ओर उन्मुख हो गया है। आज समाज में वैज्ञानिक उन्नति हो रही है। मशीनों, उपकरणों की संख्या दिनो–दिन बढ़ती जा रही है। जिस शिक्षा में व्यक्ति को समृद्धि एवं भौतिक सम्पन्नता की प्राप्ति नही दिखाई दे रही है उस शिक्षा को व्यर्थ माना जाने लगा है।

2. विभिन्न वैज्ञानिक उपकरण : तकनीक प्रगति के परिणामस्वरूप अनेक शिक्षण सहायक उपकरणों का आविष्कार किया जा रहा है, जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अकल्पनीय परिवर्तन हुआ है। आज श्रव्य–दृश्य सहायक सामग्री से शिक्षा को प्रभावशाली बनाया जा रहा है। शिक्षण प्रक्रिया में रेडियो, टेप रिकार्डर, ग्रामोफोन, मानचित्र मॉडल, ओ.एच.पी. स्लाइड, फिल्म प्रोजेक्टर बुलेटिन बोर्ड आदि का प्रयोग अधिकता से किया जा रहा है। जिसका परिणाम है कि वर्तमान समय में इसकी सहायता से कम समय तथा कम खर्च करके अधिक से अधिक लोगों तक शिक्षा पहुँचायी जा रही है। तकनीक की ही देन है कि आज छात्र घर बैठे–बैठे दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अपनी शिक्षा को पूर्ण कर रहे है।

3. सामाजिक शिक्षा पर तकनीक का प्रभाव : तकनीक का प्रभाव हमारे परिवार एवं सामाजिक शिक्षा पर भी पड़ा है। परिवार के सभी सदस्य किसी न किसी एक व्यवसाय में लगे हुए हैं। लोग अपने व्यवसाय की ओर जितना ध्यान दे रहे हैं उतना परिवार के सदस्यों पर नहीं, जिसके कारण लोगों में पारस्परिक प्रेम, सद्भावना और सहयोग की कमी हुई है।

अतएव हम कह सकते हैं कि तकनीक एवं औद्योगीकरण का प्रभाव परिवार पर भी पड़ा है। बच्चों को पहले जो शिक्षा परिवार में मिलती थी, अब सम्मिलित परिवार प्रथा समाप्त हो जाने के कारण नहीं मिल पा रही है। अर्थात् बालक में नैतिकता एवं समाजीकरण का अभाव सा हो गया है।

समाज पर तकनीकी का प्रभाव : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य जिस समाज के बीच जन्म लेता है उसमें रहता है उसे उस समाज की भाषा; रहन–सहन, खान–पान आचरण की विधियाँ और रीति–रिवाज आदि सीखने होते हैं। बिना ये सब सीखे वह उस समाज में समायोजन नहीं कर सकता। उसका सदस्य नहीं बन सकता। वह ये सभी कार्य एक दिन में नहीं सीखता, इसमें उसे बहुत समय लगता है।

आज का समाज तकनीकी ज्ञान से ओतप्रोत है। इसका प्रभाव मनुष्य के जीवन के लगभग सभी पक्षों पर पड़ा है। यही कारण है कि आज हमारी सामाजिक व्यवस्था बिल्कुल बदल सी गई है। वेवलेन ने लिखा है, कि सामाजिक विघटन केवल टेक्नोलॉजी के कारण हो रहा है। आगबर्न ने रेडियो का प्रभाव 150 रूपों में दिखाते हुए यह सिद्ध किया है कि तकनीक का ऐसा विश्वव्यापी प्रभाव है कि उससे जीवन ही बदल गया है। यह प्रभाव उन देशों में और भी अधिक देखने को मिल रहा है जिन देशों में तकनीकी प्रगति अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई है।

परिवार पर प्रभाव : तकनीक के प्रभाव ने पारिवारिक ढांचे को बहुत अधिक खण्डित किया है। आज हमारे सामने परिवार का जो संगठन दिखाई दे रहा है वह पहले जैसा नहीं है, उसका अस्तित्व केवल कथन मात्र शेष रह गया है। छोटे बच्चों का पालन–पोषण नर्सरी स्कूलों में हो रहा है, माताएं अपनी उत्तरदायित्व से दूर होती जा रही है। बच्चों को माता–पिता एवं परिवार का प्यार एवं संस्कार नहीं मिल पा रहा है। जिससे बच्चे कुंठित होते जा रहे है।

धार्मिक संस्थाओं पर तकनीक का प्रभाव :

धार्मिक संस्थाओं जैसे–मंदिर, मस्जिद और गिरजाघरों आदि पर भी तकनीक का प्रभाव पड़ा है। लोगों के मन से आध्यात्मिक विश्वास अब दूर होता जा रहा है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति के लोग ईश्वर को मानते ही नहीं है और तर्क देते हैं कि आधुनिकता के दौर में इसे यांत्रिक माना जाने लगा है। इसलिए धार्मिक संस्थाओं का क्षरण होने लगा है। पहले चन्द्रमा को विश्वास

का देवता माना जाता था, जिसका अब पर्दाफाश कर दिया गया है। वह कोई देवता नहीं है, वहां अमृत का समुद्र नहीं है, वहां केवल ऊँचे–ऊँचे नुकीले पहाड़, गड्ढे, पत्थर तथा रेत के कण मात्र हैं। मनुष्य अब मंगल तथा अन्य ग्रहों पर भी चढ़ाई करने लगा है।

तकनीक के कुछ अन्य प्रभाव

तकनीक का ही प्रभाव है कि व्यक्ति आज प्रत्येक कार्य समय से करना चाहता है। यदि कार्य में देरी होती है तो उसकी महत्ता समाप्त हो जाती है। यही कारण है कि समाज में एकता, अपनापन और घनिष्टता एवं सहयोग की भावना में कमी आयी है। तकनीक के कारण नगरीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। जिसके कारण अनेक प्रकार के रोगों एवं अपराधों की संख्या में इजाफा हुआ है।

आज के युग में धन ही सब कुछ होता जा रहा है। धन प्राप्त करने के लिए उद्योग–धन्धे लगाये जा रहे हैं। पति–पत्नी दोनों ही नौकरी करके धन कमाना चाहते हैं। बच्चों की देखरेख हेतु शिशु परिचर्या खुल रहे हैं, नर्सरी स्कूल, डे बोर्डिंग, स्कूल खोले जा रहे हैं। परन्तु वहां उनकी उतनी तन्मयता से देखभाल एवं विकास नहीं हो पाता है, जितनी घर पर माताओं के द्वारा होता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि आज आधुनिक तकनीक का प्रभाव हमारे पुरे समाज, जीवन शैली, रहन–सहन तथा शिक्षा की रूपरेखा, शिक्षा के पाठ्यक्रम, उद्देश्य आदि पर अत्यधिक दृढ़ता के साथ पड़ा है हमें तथा आपको इस तकनीक के सहयोग से शिक्षा एवं समाज को प्रगति के पथ की ओर उन्मुख करने में सहयोग करना चाहिए न कि अवनति की ओर।

संदर्भ

1.शरतेन्दु, सत्य नारायण दूबे : शिक्षा की नवीन दार्शनिक पृष्ठभूमि, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2009 2.लाल, रमन बिहारी : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ 3.शर्मा, आर0ए0 : शिक्षण तकनीकी, विनय रखेजा, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ 4.कुलश्रेष्ठ, एस0 पी0: अग्रवाल पब्लिकेशन हाउस, मेरठ 5.शुक्ला, सी–एस : शिक्षा के समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिक आधार, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद। 6.उपाध्याय, राजेश्वर, एवं डॉ0 सरला पाण्डेय : शैक्षिक टेक्नोलॉजी के आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी 7.पाण्डेय, के0 पी0 : शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी 8.तोमर, गजेन्द्र सिंह : शैक्षिक तकनीकी के मूल तत्व एवं प्रबन्धन, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, शिवाली रोड, मेरठ

●●●●●

ISSN 0970-1745
SLRF Impect Factor 2.364

Shodh

An International Refereed & Peer-Reviewed Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

प्रधान संपादक
डॉ० सुरेन्द्र पाण्डेय

Year-35 Vol-96 January, 2018 **ISSN 0970-1745**
UGC Approved No. 42069

Shodh

(A Refereed Research Journal, Law & Multidisciplinary)

EDITOR IN CHIEF

Dr. Surendra Pandey, Varanasi

EDITOR

Dr. Shailendra kumar

Prof. Gelina Rousseva

EDITORIAL BOARD

Dr. Mahmoud Sobhi
Al Jouf University, Sakaka (KSA)

Kedar Nath Yadav
Assistant Professor, R.S.K.D. PG College, Jaunpur, U.P. India

Shri Sachin Awasthi
Department of Economics (M.P.)

Dr. Manohar Chitre
Asst. Professor Commerce, Mata Jijabai Girls' P.G. College, Moti Tabela, Indore.

Prof. Rajkumar Singh
F.M.S., Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.)

Prof. Rajeswar Pal
Al Jouf University, Sakaka (KSA)

Prof. Sudhaker Singh
Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.

CONTENTS

1.	Problems of Enforcement of Pollution Control Legislations in India -An Appraisal and Suggested Reforms ***Dr. Dinesh Kumar Gupta**	1—10
2.	आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के विकास में सामाजिक परिस्थितियों का योगदान ***कु. अणिमा शुक्ला**	11—13
3.	Knowledge Management and Learning in Organizations ***Kedar Nath Yadav**	14—22
4.	परिवार नियोजन कार्यक्रम का सामाजिक जीवन पर प्रभाव ***Mukesh Kumar Malviya**	23—25
5.	An Analysis of Effectiveness of Viral Marketing Campaigns ***Sadhana Tiwari**	26—29
6.	GIRISH KARNAD'S *HAYAVADANA*: A CRITIQUE ***Talluri Mathew Bhaskar**	30—33
7.	भारत में ब्रिटिश शिक्षा का उद्‌भव एवं विकास ***डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे**	34—35
8.	हड़प्पा एवं वैदिक सभ्यता के समान तत्व ***डॉ0 बिन्दू त्रिपाठी**	36—38
9.	झारखण्ड राज्य के उराँव जनजाति में राजनीतिक चेतना का विकास ***डॉ० संतोष उराँव**	39—43
10.	Status of Women and Measures for eradication of violence against women ***Prativa Kumari**	44—49
11.	आधुनिकता - ऐतिहासिक विवेचन ***वीणा शुक्ला**	50—52

●●●●●

Shodh

भारत में ब्रिटिश शिक्षा का उद्भव एवं विकास

*डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे

[illegible]

[illegible] अंग्रेजी को अनुचित महत्व दिया और उसके बोझ से छात्रों के दिमाग [illegible] अंग्रेजी ने हमारी शिक्षा के प्रति दिनोंदिन बेरुखी और शिक्षा के स्तर में जो गिरावट आयी उसके मुख्य कारण हैं :

1. भूमण्डलीय संस्कृति की तीव्रगामिता बनाम शिक्षा माध्यम में पहचानीय हेतु भारतीयों का अरुचि शिक्षण।
2. द्विभाषीकरण नीतिगत की नीति की अवधारणा विभाजक परिणाम का की एक वर्ग में से का परिणाम भारतीय शिक्षण में गई थे।
3. शिक्षा की बौद्धिक दासता से मुक्त कराने वाले नीतियों की तैयारी के का में प्रयोग।
4. द्विभाषीकरण की नीति में पहले प्राथमिक शिक्षा का अंग्रेजी माध्यम तथा माध्यमिक शिक्षा का भारतीय माध्यम को देकर अपना निर्णायक अंतर्राष्ट्रीय स्तर में पहचान बनाते थे।

ब्रिटिश प्रशासन की शिक्षा नीति में पढ़ने वाली उपलब्धि यह थी कि इसने भारत को अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य और कुछ हद तक पश्चिम की दार्शनिक विचारधारा वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास और सामाजिक एवं राजनैतिक संस्थाओं से परिचय कराया। यह परम्परा सदियों से उपयुक्त परम्परा पर हुआ एक भारत में भारतीय संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था अपनी ईतिहास अवस्था में थी। इन परम्पराओं का सही तौरतरीकों समझ पढ़ने भारतीय मनिषियों को पुरानी पुस्तिका से विदेशी की दासता से मुक्त किया और आधुनिक भारतीय शिक्षा में पुनर्जागरण की पीठ रख दी।

संदर्भ

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]

ISSN 0970-1745

Shodh

An International Refereed & Peer-Reviewed Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

Year-35 Vol-97 Feb.2018 ISSN 0970-1745

UGC Approved No. 42869

Shodh

(A Refereed Research Journal, Law & Multidisciplinary)

EDITOR IN CHIEF

Dr. Surendra Pandey, Varanasi

EDITOR

Dr. Shailendra Kumar

Prof. Galina Rousseva

EDITORIAL BOARD

Dr. Mahmoud Sabri

Al Jouf University, Sakaka (KSA)

Kedar Nath Yadav

Assistant Professor, R.S.K.D. PG College, Jaunpur, U.P. India

Shri Sachin Awasthi

Department of Economics Government College, Aron, Distt-Guna (M.P.)

Dr. Manohar Chitre

Asst. Professor Commerce, Mata Jijabai Govt. P.G. College, Moti Tabela, Indore

Prof. Rajkumar Singh

C.W.S., Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.)

Prof. Rajeshwar Pal

Al Jouf University, Sakaka (KSA)

Prof. Sudhakar Singh

Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.)

CONTENTS

1. Bhopal Mass Disaster Litigation: Legal Issues and Outcome — 1 - 8
*Dr. Dinesh Kumar Gupta

2. Right to Health: A distant Dream in West Bengal, a critical analysis — [illegible]
*Bhabani Prasad Mishra

3. Violence against Women in India: An Overview — [illegible]
*Dr. Mallikarjun Talwar

4. Protection of Investors' Interest: An Analytical Study — [illegible]
*Pratima Pandey

5. Use of ICT for Developing Conceptual Understanding in Chemistry — [illegible]
*Prashant Thote

6. This paper investigated the accounts — [illegible]
*Vipin

7. भारतीय राजनीति : सामाजिक संरचना — [illegible]
*डॉ. गीता श्रीवास्तव

8. Covid - 19 and Policy of Indian Government — [illegible]
*Dr. Bhuvan Dayal

9. An Observation of Political Participation of Dalit Women in Panchayati Raj Institutions — [illegible]
*Prativa Kumari

10. कोसी क्षेत्र में कृषि सिंचाई एवं कृषक रोजगार की समस्या : कारण एवं निवारण — [illegible]
*[illegible]

11. सरकारी नारी के [illegible] — [illegible]
*डॉ. [illegible] त्रिपाठी

12. विद्यार्थी जीवन में [illegible] आध्यात्मिक अनुशासन का महत्व — [illegible]
*डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे

13. गांधी एवं आधुनिकता — [illegible]
*सीमा शुक्ला

विद्यार्थी जीवन में स्वतन्त्रता आधारित अनुशासन का महत्व

*डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे

[illegible]

प्रस्तावना

[illegible]

अनुशासन की आवश्यकता एवं महत्व

[illegible]

अध्ययन के उद्देश्य

[illegible]

स्वतन्त्रता की अवधारणा

[illegible]

अनुप्रयोग की आवश्यकता

1. [illegible]

2. [illegible]

3. [illegible]

4. [illegible]

5. [illegible]

6. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

निष्कर्ष

[illegible]

संदर्भ

[illegible]

Vol. XVIII
Number 1

ISSN 2319-7129
(Special Issue) February, 2018

EDU WORLD

A Multidisciplinary International
Peer Reviewed/Refereed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

ISSN : 2319-7129

EDU WORLD

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. XVIII, Number - 1 February, 2018

(*Special Issue*)

Chief Editor

Dr. S. Sabu

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O., Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor

S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation

4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

CONTENTS

Cultural Diversity in South Asia: Challenges and Prospects 1
Dr. Amandeep Kaur

Preferential Policy: Concept, Debates and Contestation in China. 7
Chandra Sen

The Role of Civil Societies in Promoting Good Governance in Bangladesh 16
Minati Kalo

Conversion of Waste into Energy : A Case Study of Qatar 25
Sonal Kumari

Corruption and its Challenges to the Governance in China 29
Sumanta Kumar Sahu

Women's Educational Policies During Soviet a Period : Historical Analysis 39
Dr. Mahashraddha Yadav

History in Transition: A Reflection on Women's Educational Attainment in Soviet Union 50
Dr. Mahashraddha

Engaging in the Field Work: A Fieldworker's Note on Methodological Exploration on Education and Women's Empowerment 56
Dr. Shashwat Kumar

Contesting Terrain of Marginality in Education: A Study of Women Empowerment and Education in Pratapgarh, Uttar Pradesh 61
Dr. Shashwat Kumar

Special Economic Zones-An In-Depth Analysis of SEZ distribution 68
Dr. Sonu Kumar Mishra

Water Security Challenges in North Eastern Part of India on Sharing Trans-Boundary River of Brahmaputra Between India and China 76
Md. Najibullah Singakhongbam and Hena Bari

Yogic Management of Diabetes 84
Dr. R. Lakshminarayana

India' Act East Policy: A Study of Mekong-Ganga Cooperation 90
Himanshu

Responsible Wildlife Tourism: A Theoretical Review 98
Mahender Reddy Gavinolla and Prof. Sampada Kumar Swain

अशोक द्वारा नियुक्त 'धर्ममहामात्र एक प्रदेयः विश्लेषणात्मक समीक्षा 194
डॉ. सोनी कुमारी

डॉ.- राही मासूम रजा के कृतित्व का सामान्य परिचय 198
डॉ. तब्बसुम खान

वैश्विक शान्ति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता 208
डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और आदिवासी 215
डॉ. तुंगनाथ मौआर

बिहार में महिला सशक्तिकरण में पंचायती राज की भूमिका 224
डॉ. पूनम कुमारी

NITI Aayog (National Institution for Transforming India) 229
Dr. Poonam Kumari

Women Empowerment in Present Scenario 233
Dr. Poonam Kumari

A Trend of Intra-Industry Trade: A Sino-Indian Case Study 238
Madhurendra Singh

Taxation System in India 243
Madhurendra Singh

E-Banking 255
डॉ. पीयूष कुमार गुप्ता

राजनैतिक कारण और बाल अपराध 264
डॉ. तन्द्रा शरण

बाल अपराधी या बालापचार बच्चों का माता-पिता के साथ सम्बन्ध 267
डॉ. तन्द्रा शरण

प्रेमचंद के कथा-साहित्य में शिक्षा पद्धति की पड़ताल 270
डॉ. अनिल शर्मा

Investigation of Psychological Factors Underlying Peptic Ulcer 274
Dr. Nishi Bijiya

Synthesis of Imine Bond Containing Insoluble Polymeric Ligand and its Transition Metal Complexes, Structural Characterization and Catalytic Activity on Esterification Reaction 280
Dr. Prabhakar Kumar

वैश्विक शान्ति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता

डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे*

भूमिका

व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का ह्रास वैश्विक अशांति का प्रमुख कारण है। आधुनिक युग में शिक्षा आध्यात्मिक व नैतिक विकास प्रक्रिया के स्थान पर आर्थिक विकास की प्रक्रिया बन गयी है। शिक्षा के उद्देश्यो में आर्थिक विकास को प्रमुख स्थान दिया जा रहा है। पाठ्यक्रम में केवल वैज्ञानिक व तकनीकी शिक्षा को ही प्रधानता दी जा रही है तथा अध्यात्म, धर्म व नैतिकता को महत्व नहीं दिया जा रहा है जिसके कारण लोगों में अनुशासनहीनता एवं असन्तोष की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वर्तमान वैश्विक परिवेश में नैतिकता व मानवीयता का ह्रास हुआ है। आधुनिक भौतिकवादी युग में मानव ने मानसिक शान्ति ,परस्पर सद्भाव तथा एकाग्रता को खो दिया है जिसके कारण धार्मिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों में ह्रास हो रहा है।

आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी युग में एक ओर जहाँ मनुष्य के सुख– सुविधाओं में वृद्धि हुई है वही दूसरी ओर आणविक बमों के आविष्कार ने सम्पूर्ण मानव के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। विकास की इस तीव्र आँधी ने जहाँ जीवन के अधिकांश मानवीय मूल्यों, आस्थाओं और प्रतीकों पर प्रहार किया है, वहीं दूसरी तरफ सम्पूर्ण पीढ़ी को परम्परा व आधुनिकता , जड़ता एवं गतिमयता के द्वन्द्व में भटकने के लिए छोड़ दिया है। लोगों में मानवीय , आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्य समाप्त हो रहा है और भौतिकवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है परिणामस्वरूप मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है।

आज व्यक्ति के जीवन में भौतिक सुख–सुविधा एवं समृद्धि के नाम पर बहुत कुछ है, ज्ञान एवं कौशल की कमी नहीं है इसके बावजूद भी चारो तरफ अशान्ति, अराजकता एवं आतंकवाद का साम्राज्य व्याप्त है। मनुष्य, मनुष्य से ही भयभीत होने लगा है तथा लोगों का एक दूसरे पर विश्वास नहीं रह गया है। यदि गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि वर्तमान सामाजिक परिवेश की सभी समस्याओं की जड़ नैतिक मूल्य शिक्षा विहीन शिक्षा प्रणाली ही है। पहले शिक्षा का उद्देश्य मुक्ति होती थी, चरित्र निर्माण होता था किन्तु आज मुक्ति, आध्यात्मिकता एवं चरित्र निर्माण की बात करना लोग अप्रासंगिक मान रहे हैं। वर्तमान समय में मनुष्य अपनी उन नैतिक मूल्यों से विमुख हो रहे हैं जिसे अंगीकरण करने पर न केवल अपना कल्याण अपितु पीड़ित मानवता को भी शान्ति प्रदान की जा सकती है। नैतिक मूल्यों के अभाव में आज के छात्र एवं शिक्षक अनैतिक गतिविधियों में लिप्त है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

विद्यालयों में हम छात्रों को विविध विषयों का ज्ञान प्रदान करते हैं किन्तु बालकों की आदतों, उनके व्यवहार, उनके आचरण, उनके स्वभाव आदि के परिमार्जन के लिए हम कोई उपाय नहीं करते। हमारा वर्तमान

*प्रवक्ता बी0एड0 कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के जौनपुर

पाठ्यक्रम नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों की जानकारी ठीक से प्रदान नहीं करता। अतः वैश्विक शान्ति के लिए नैतिक मूल्यों की शिक्षा की प्रत्येक जागरूक नागरिक को आवश्यकता प्रतीत होती है।

औद्योगीकरण ने परिवार के एवं समाज के ढ़ाँचे में परिर्वतन कर दिया है। अतः अब नैतिक मूल्यों की शिक्षा का दायित्व केवल घर या समाज पर ही नहीं छोड़ा जा सकता। विज्ञान की प्रगति ने हमारे चारों ओर के वातावरण में परिर्वतन कर दिया है। जनतन्त्र ने सामाजिक आकांक्षाओं में भी परिर्वतन कर दिया है। आज के युवाओं में उत्साह है, किन्तु इस उत्साह को उचित दिशा देने में वर्तमान शिक्षा प्रणाली अक्षम है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि हमारे नवयुवकों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा किसी स्तर पर नहीं दी जाती। नये परिवेश में नैतिक मूल्यों की शिक्षा और आवश्यक हो गई है।

नैतिक मूल्यों की शिक्षा किसी राष्ट्र के लिए ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए महत्वपूर्ण है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने से बालकों में सहिष्णुता, उदारता, सहयोग, समता, त्याग, संयम, विश्व–बन्धुत्व इत्यादि गुणों का विकास किया जा सकता है। वैश्विक शान्ति के लिए बालक का सर्वांगीण विकास आवश्यक है। वैश्विक शान्ति के लिए मानवीयता प्रथम आधार है क्योंकि वैश्विक शान्ति विश्व कल्याण के लिए है और विश्व कल्याण के लिए मानवीयता व मानव मात्र का कल्याण आवश्यक है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा के माध्यम से ही विद्यार्थियों में आत्मानुशासन की प्रवृति का विकास किया जा सकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

नैतिक मूल्यों की अवधारणा का अध्ययन करना।
नैतिक मूल्यों को विकसित करने हेतु उपाय का अध्ययन करना।
वैश्विक शांति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

नैतिक मूल्य की अवधारणा

वे निश्चित मानदण्ड जिसके आधार पर व्यक्ति, वस्तु, व्यवहार व घटना का अच्छा–बुरा,सही–गलत के रूप में परख की जाती है,मूल्य कहलाते हैं। मूल्य ही धर्म कहलाता है अर्थात धर्म उन शाश्वत मूल्यों का नाम है जिनकी मन, वचन, कर्म की सत्य अभिव्यक्ति से ही मनुष्य कहलाता है। धर्म का अभिप्राय मानवोचित आचरण संहिता है। यह आचरण संहिता ही नैतिकता है और इस नैतिकता के मानदण्ड ही नैतिक मूल्य हैं। नैतिक मूल्यों के अभाव में कोई भी व्यक्ति, समाज या देश निश्चित रूप से पतनोन्मुख हो जायेगा। नैतिक मूल्य मनुष्य के विवेक में स्थित, आन्तरिक व अन्तः स्फूर्त तत्व हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में आधार का कार्य करते हैं। नैतिक मूल्यों के कारण ही समाज में संगठनकारी शक्तियाँ व प्रक्रिया गति प्राप्त करती है और विघटनकारी शक्तियों का क्षय होता है विश्वबन्धुत्व की भावना, मानवतावाद, समता भाव, प्रेम और त्याग जैसे नैतिक गुणों के अभाव में विश्वशांति , अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, मैत्री आदि की कल्पना भी नहीं की सकती है।

हरबर्ट. जैसे शिक्षाशास्त्री तो सम्पूर्ण शिक्षा का उद्देश्य ही नैतिकता का विकास मानते हैं। यदि पढ़–लिखकर बालक सच्चरित्र न बन सका तो शिक्षा बेकार है। छात्र में अनुशासन , सत्यवादिता, सहयोग, भ्रातृत्व, धैर्य आदि गुणो का विकास नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा सम्भव है। परिवार, समाज, संस्कृति, राजनैतिक संस्थाओं

के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास, शुभ एवं भद्र के लिए श्रद्धाभाव का विकास एवं अन्याय, द्वेष, विशेषाधि
ाकार, दबाव आदि के विरोध का साहस नैतिक शिक्षा से ही सम्भव है।

नैतिक मूल्यों के प्रकार

प्रमुख नैतिक मूल्य निम्नलिखित है–

सत्य

वैश्विक शान्ति हेतु सत्य एक प्रमुख नैतिक मूल्य है। संसार में सत्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। आज लोगों में सत्य से दूर रहने की प्रवृत्ति है। यदि सत्य पर अडिग रहा जाय तो शान्ति सम्भव है। असत्य के मार्ग पर चलने के कारण ही लोगों का जीवन तनावग्रस्त है। प्राचीन समय में लोगों में यह विश्वास रहता था कि सत्य ही ईश्वर है। सत्य का तात्पर्य केवल सच बोलना ही नहीं वरन् विचार, वाणी और आचार में भी सत्य होना आवश्यक है। सत्य का अनुपालन धर्म, राजनीति, समाज एवं परिवार सर्वत्र होना चाहिए। व्यक्ति जब तक काम, क्रोध, लोभ, मोह के प्रभाव में रहेगा, वह सत्य का दर्शन नहीं कर सकता। जो स्वयं नैतिक रूप से शक्तिमान होता है, वही सत्य मार्ग पर चल सकता है।

अहिंसा

वैश्विक अशान्ति के प्रमुख कारणों में लोगों में व्याप्त हिंसा की प्रवृत्ति भी है। आज लोग छोटी–छोटी बातों पर भी हिंसा का मार्ग अपना लेते हैं जो विद्रोह का प्रमुख कारण बन जाती है। वैश्विक शान्ति की स्थापना के लिए अहिंसा रूपी नैतिक मूल्य को प्रमुख रूप से ग्रहण करना होगा। प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों, उपनिषदों, एवं मनुस्मृति आदि के अनुसार अहिंसा का अर्थ साधारणतः किसी प्राणी को कष्ट नहीं पहुँचाना एवं किसी का प्राण नहीं लेना है। जैन मत के अनुसार "सभी परिस्थितियों में सभी प्राणियों के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा हिंसा का वर्जन है।"

अहिंसा के बारे में महात्मा गाँधी जी का विचार था कि "यदि अहिंसा के पुजारी की सभी क्रियाओं के मूल में करूणा रहे, यदि वह क्षुद्र जीव को यथाशक्ति कष्ट पहुँचाने से बचता रहे और उसे बचाता रहे तथा इस प्रकार हिंसा के चक्कर से निरंतर दूर रहे तो फिर उसका विश्वास अहिंसा में अडिग हो जायेगा।" शत्रुओं से प्यार, बुराई के बदले भलाई और घृणा के बदले प्यार करने की भावना गाँधी जी के अहिंसा की कल्पना का तत्व था। उनकी अन्तर्दृष्टि थी कि यदि हम सत्य स्वरूप ईष्वर को पाना चाहते हैं तो हमें इसके लिए निश्चय ही अहिंसा का मार्ग अपनाना होगा।

प्रेम

वैश्विक शान्ति के लिए प्रेम रूपी नैतिक मूल्य भी अनिवार्यतः धारण करना होगा। हिंसा की प्रवृत्ति प्रेम के अभाव में ही उत्पन्न होती है। यदि हम लोगों के प्रति प्रेम का भाव रखें तो निश्चित ही अन्य लोगों का हमारे प्रति प्रेम का ही भाव रहेगा। आज भाई–भाई में भी सच्चे प्रेम का अभाव है जिसके कारण छोटी–छोटी बातों पर विवाद प्रारम्भ हो जाता है तथा कुछ लोग हिंसा का मार्ग चुन लेते हैं। जब लोगों में आपस में ही प्रेम का भाव नहीं है तो ऐसे लोगों से वैश्विक शान्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

नैतिक मूल्यों में धर्म का भी प्रमुख स्थान है। नैतिकता के लिए धर्म का वही स्थान है, जो जमीन में पेड़ उगने के लिए जल का होता है। धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं है तथा यह हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाइयत आदि से परे है। चूंकि विश्व के सभी मानव एक ही ईश्वर की सन्तान है अतः सभी मानव आपस में भाई–भाई हैं। सभी लोगों से नैतिकतापूर्ण व्यवहार करना ही सबसे बड़ा धर्म है। सच्चा धर्म यही शिक्षा देता है कि हमें कुछ ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे दूसरे को कष्ट पहुँचे। यदि सभी लोग इस धर्म का पालन करेंगे तो प्रत्यक्षतः रूप से वैश्विक शान्ति की स्थापना होगी।

ईमानदारी

नैतिक मूल्यों में ईमानदारी का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ईमानदारी एक ऐसा माध्यम है जिससे लोगों का विश्वास एक दूसरे पर बना रहता है। हमें अन्दर एवं बाहर दोनों रूप में ईमानदार रहना चाहिए। ईमानदारी से आत्मबल मजबूत होता है। कहा भी गया है "ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है (Honesty is the best Policy.)"

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु पाठ्यक्रम

नैतिक मूल्यों की उपस्थापना भी पाठ्यक्रम के माध्यम से ही सम्भव है। अन्धविश्वासों, संकुचित सिद्धान्तों तथा रूढ़िगत धार्मिक व्यापारों से ऊपर उठकर ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण हो जिसमें धर्म के आधारभूत सिद्धान्तों का निरूपण हो। धर्म वह है जो मनुष्य–मनुष्य में मेल स्थापित करता है। भेद, घृणा, वैमनस्य तथा कटुता उत्पन्न करने वाले सिद्धान्त कभी भी धर्म की श्रेणी नहीं आ सकते। इसलिए आज के यथार्थवादी युग में शिक्षा के लिए धार्मिक तथा नैतिक मूल्यों का आँचल छोड़ना श्रेयस्कर नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन से पाठ्यक्रम का जो स्वरूप निखरता है, उसमें शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर धर्म तथा संस्कृति, सामाजिक विषयों का अध्ययन, क्षेत्रीय भाषाएँ तथा उनका साहित्य, विज्ञान, वाणिज्य तथा कृषि सम्बन्धी विषयों के अतिरिक्त राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन देने वाले कार्यक्रम, शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन की योजनाएँ, स्थानीय आवश्कताओं के अनुरूप शिल्पीय, व्यावसायिक तथा औद्योगिक विषयों का समावेश वाञ्छनीय है। अधिक जीवन्त, उपयोगी, व्यापक तथा सार्थक बनाने के लिए पाठ्यक्रम को इतना लचीला बना दिया जाय कि सहपाठ्यक्रम, पाठ्येतर तथा पाठ्यक्रमीय क्रियाकलापों एवं अध्ययनों का समायोजन अध्यापक परिस्थिति तथा आवश्कतानुकूल स्वयं कर सके। परीक्षोन्मुख पाठ्यक्रम एक जड़ एवं मृत भावना है जिसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु उपाय

विद्यार्थियों नैतिक मूल्यों के विकास के लिए नैतिक शिक्षा को भी एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाय और कुछ पुस्तकें निर्धारित कर दी जाय जिनके आधार पर नैतिक मूल्यों की शिक्षा भलीभाति दी जा सके।

नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर क्रमिक रूप में विकसित करना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर जिन गुणों के विकास पर अत्यधिक बल हो, उनमें माता–पिता, आचार्य एवं अपने से बड़ों के प्रति श्रद्धाभाव भी है। यह श्रद्धा एवं आदर ऊपरी एवं दिखावटी न होकर मन से हो। इसके लिए छात्रों को समय–समय पर कुछ नियमों की जानकारी देनी पड़ेगी तथा 'श्रवणकुमार', 'राजा हरिश्चन्द्र' इत्यादि नैतिक मूल्य प्रधाननाटक कक्षा के सम्मुख उपस्थित किया जाय।

माध्यमिक स्तर पर राष्ट्र एवं विश्व के प्रति तथा मानवता के प्रति श्रद्धाभाव जाग्रत करना होगा। इसके लिए देश–प्रेमी, बलिदानी, एवं राष्ट्र–भक्तों की जीवनियाँ पढ़नी होगी। ऐसी कहानियों का चयन करना होगा जिनके आधार पर देश–प्रेम का विकास हो सके। उन घटनाओं पर बल देना होगा जो देश एवं विश्व के कार्यों मे प्रमुख हैं।

उच्च स्तर पर छात्रों में अपने पूर्वार्जित प्रेम एवं श्रद्धा की मीमांसा करनी होगी। संसार के विभिन्न धर्मों मे व्याप्त एकता को ढूँढ़ना होगा। इसके लिए उन्हें बुद्ध, कन्फ्यूशियस, सुकरात, ईसा, शंकर, मुहम्मद, कबीर, नानक, गाँधी, विवेकानंद, अरविन्द, दयानन्द आदि की जीवनियाँ पढ़ाई जायें। संसार के धार्मिक ग्रन्थों में सार्वभौमिक तत्व को छात्र पहचाने। इसके लिए इन ग्रन्थों से चुने हुए अंश को उन्हें पढ़ना होगा। इस स्तर पर यह सिखाया जाय कि वे धर्म के नैतिक मूल्य को समझ सकें। उन्हें धर्म का दर्शन पढ़ाया जाय, धर्म के मान्य एवं आदर्श सिद्धान्तों की व्याख्या उनके समक्ष प्रस्तुत की जाय ताकि वे युगानुरूप सिद्धान्तों को व्यवहृत कर सकें।

आवश्यकता इस बात की है कि विद्यालय का सम्पूर्ण वातावरण नैतिकता से ओत–प्रोत हो जिससे छात्र नैतिक नियमों का पालन कर सकें और नैतिक सिद्धान्तों को व्यवहृत कर सकें।विद्यालय का कार्य कुछ क्षण के मौन से आरम्भ हो जिससे छात्र नैतिक नियमों का मनन करना सीखें। सरल कहानी के माध्यम से नैतिकता की शिक्षा दी जाय।

भारत सरकार के सन् 1959 में बम्बई के तत्कालीन राज्यपाल श्री श्रीप्रकाशजी की अध्यक्षता में नैतिक मूल्यों के शिक्षा की एक समिति नियुक्त की गई थी, जिसके अध्यक्ष के अतिरिक्त अन्य तीन सदस्य थे– राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति श्री जी० सी० चटर्जी, जम्मू–कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री फैजी और भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के संयुक्त सचिव श्री प्रेमकृपाल। इस समिति ने नैतिक मूल्यों की शिक्षा पर विस्तार में विचार किया और अपने अन्य प्रतिवेदनों के अतिरिक्त निम्नलिखित महत्वपूर्ण सुझाव दिये–

1. प्रारम्भिक स्तर

क. सामूहिक गायन के लिए प्रातः कुछ मिनटों के लिए छात्र सभा का आयोजन हो।

ख. भाषा शिक्षण के पाठ्यक्रम में सन्तों एवं धार्मिक नेताओं के जीवन व शिक्षा के विषय में सरल और रोचक कहानियों को सम्मिलित किया जाय।

ग. यथासम्भव श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रयोग करके छात्रों की नैतिक शिक्षा में रुचि जाग्रत की जाए। विशेषतः सुन्दर चित्र, फिल्मस्ट्रिप, सुन्दर कलाकृतियों के रंगीन पुनर्मुद्रण, वास्तुकला के नमूने प्रस्तुत किये जाय।

ग. विद्यालय की समय सारिणी में एक सप्ताह में दो घण्टे नैतिक शिक्षा के लिए रखे जाने चाहिए। इन घण्टों मे विश्व के धर्मों की रोचक कहानियाँ कही जाय। धर्म के वाह्य आडम्बर को पृथक रखा जाय।

घ. विद्यालयी कार्य के माध्यम से छात्रों में 'सेवा की भावना' एवं 'कार्य ही पूजा है' की भावना जाग्रत की जाय।

ङ. विद्यालय में आयोजित शारीरिक शिक्षा एवं खेल का उद्देश्य चरित्र निर्माण हो।

2. माध्यमिक स्तर

क. प्रातःकालीन सभा में दो मिनट का मौन रखा जाय। इसके बाद पवित्र पुस्तकों या श्रेष्ठ साहित्य से कुछ अंश पढ़े जाय। सामूहिक गायन को भी प्रोत्साहित किया जाय।

ख. इतिहास और सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में विश्व के महान धर्मों की शिक्षाओं के मूलतत्व पढ़े जाय। भाषा शिक्षण या सामान्य शिक्षण में विभिन्न धर्मों के विषय मे कथाएँ सम्मिलित की जाय।

ग. सप्ताह में एक घण्टा नैतिक मूल्यों की शिक्षा के लिए पृथक से रखा जाय। इस कक्षा में विचार–विमर्श को प्रोत्साहित किया जाय। उपयुक्त वक्ताओं को भी आमंत्रित करके नैतिक शिक्षा पर व्याख्यान कराया जाय।

घ. छुट्टियों में या विद्यालयी समय के अतिरिक्त संगठित रूप में समाज सेवा की जाए। इस सेवा का उद्देश्य हो–श्रम के प्रति निष्ठा, मानवता से प्रेम, देशभक्ति और आत्मानुशासन।

ङ. विद्यालय में छात्र की उपलब्धियों की जाँच करते समय आचरण एवं चरित्र के गुणों की परीक्षा अवश्य हो।

3. विश्वविद्यालयी स्तर

क. प्रातः विभिन्न समूहों में छात्र मौन–चिन्तन करें। ऐच्छिक रूप से अध्यापकों के निरीक्षण में यह कार्य हो।

ख. तुलनात्मक धर्म' में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की रचना की जाय और इसे महत्वपूर्ण विषय बनाया जाय।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वैश्विक शान्ति के लिए नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता अत्यधिक है। यदि सभी व्यक्तियों में नैतिक मूल्यों का समावेश कर दिया जाय तो लोगों में उत्तम विचार उत्पन्न होगा। वे आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे, कहीं भी हिंसा का भाव नहीं रहेगा तथा सभी लोगों में स्वार्थ की भावना त्याग कर परमार्थ की भावना जाग्रत होगी। केवल एक व्यक्ति में ही नैतिक मूल्यों का समावेश होने से ही वैश्विक शान्ति सम्भव नहीं है। वैश्विक शान्ति की स्थापना के लिए स्वयं में नैतिक मूल्यों को ग्रहण करने के पश्चात् अन्य लोगों में भी नैतिक मूल्यों का समावेश कराना होगा। यह कार्य वही कर सकते हैं जो नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हों। यदि हमारे अन्दर नैतिक मूल्यों का अभाव रहेगा तो हम अन्य लोगों में नैतिक मूल्य का विकास नहीं करा सकेंगे। पहले हम स्वयं के अन्दर नैतिक मूल्य धारण करें, उसके पश्चात् अन्य लोगों को नैतिक मूल्य धारण करने हेतु प्रेरित करें तभी वैश्विक शांति की स्थापना होगी जिससे

सम्पूर्ण विश्व में भाईचारा, निःस्वार्थ की भावना, सौहार्द्र एवं प्रेम का वातावरण विकसित होगा तथा प्रत्येक मानव शान्तिपूर्वक खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकेगा ।

नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा ही वैश्विक शान्ति सम्भव है क्योंकि इसके द्वारा ही व्यक्ति में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, लड़ाई–झगड़े इत्यादि कुप्रवृत्तियों को रोका जा सकता है। यदि सभी जीवों में एक ही ईश्वर की सत्ता है तो मानव जाति में जाति–भेद, रंग–भेद, नस्ल–भेद, लिंग–भेद, ऊँच–नीच भेद अनुचित है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा बालकों में भेद–भाव रहित विश्व–बन्धुत्व की भावना का विकास उत्पन्न करके मानव मात्र की एकता पर बल तथा मानव जाति के अधिकतम कल्याण की प्रवृत्ति का विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गाँधी, महात्मा : 'यंग इण्डिया' 15 मार्च 1926।

गाँधी, मोहन दास करमचन्द (1989) : 'मेरे सपनों का भारत', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

गुप्ता, राम बाबू(1993) : 'महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री' रतन प्रकाशन मन्दिर, आगरा ।

धनकर, रोहित (2004) : 'शिक्षा और समझ' आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला , हरियाणा ।

पाण्डेप रामशकल (2005) : 'शैक्षिक निबंध' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

पाण्डेय, एच0 एल0 (2000) : 'गांधी, नेहरू, टैगोर एवं अम्बेडकर' प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद।

वार्ष्णेय, सोनी : 'नवनीत' फरवरी 2014

Website:- : www.navneethindi.com

ISSN 22[illegible]-2552

अधिकार

ADHIKAR

[illegible] ational Refe[illegible]
Journal Related to Hi[illegible]

Adhikar

प्रधान संपादक

डॉ० मुकेश कुमार मालवीय

E-Mail: adhikara2z@gmail.com

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATI[illegible]
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

GC Approved No.45496, SLRF Impact Factor: 2.360, ISSN 2231-2552

अधिकार

(विधि, मानवाधिकार, साहित्य, समाज एवं विज्ञान को समर्पित मासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध–पत्रिका)

ADHIKAR

An International Research Journal Related to Higher Education for all Subject

प्रधान संपादक
मुकेश कुमार मालवीय
(सहायक प्राध्यापक)
विधि–संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ0प्र0)
संपर्क–08004851126

संपादक एवं समन्वयक
ओमकार प्रसाद मालवीय
राकेश कुमार मालवीय

कार्यकारी संपादक
डॉ. रजनीश कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक विधि–संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी

संपादकीय
ओमकार प्रसाद मालवीय
(संपादक एवं समन्वयक)
अधिकार शोध–पत्रिका
मुकाम पोस्ट–चाँद, तहसील–चौरई
जिला– छिन्दवाड़ा (म.प्र0) 480110

संरक्षक
प्रो. (डॉ.) निशा दुबे
कुलपति, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
प्रो. बी. सी. निर्मल
विधि–संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

संपादक मण्डल
प्रो. तिकाशा शोबा
मानवाधिकार संगठन, काठमांडू नेपाल
प्रो. सरोज बिल्लोरे
राजनीति–विज्ञान विभाग, ओल्ड जी.डी.सी., इंदौर
डॉ. लोयला टॉय
स्पेस साइन्स, जर्मनी
डॉ. मोना पुरोहित (विभागाध्यक्ष)
विधि–विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
डॉ. जे.के. जैन (पूर्व प्राचार्य)
शासकीय नवीन विधि महाविद्यालय, इंदौर
डॉ. अजेन्द्र श्रीवास्तव
विधि–संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. एस. के. तिवारी
एकेडेमिक स्टॉफ कॉलेज, बी.एच.यू. वाराणसी
डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव (रीडर)
हिन्दी डॉ.शकुन्तला मिश्रा पुनर्वास वि.वि.,लखनऊ

ोधपत्र भेजने हेतु नियमः–शोधपत्र हिन्दी या अंग्रेजी भाषा में E-mail:adhikara2z@gmail.com र भेज सकते हैं। हिन्दी, कृतिदेव–10 में तथा अंग्रेजी, न्यू-रोमन में होना चाहिए। शोधपत्र ारगर्भित अधिकतम शब्द सीमा 2500 शब्द या लगभग 10 पेज में होना चाहिए। शोधपत्र के अन्त में ोधार्थी का नाम, मोबाईल नं0, ई–मेल सहित पूरा पता लिखा होना चाहिए। सहयोग राशि प्रत्येक ोधपत्र के लिए SBI DD 1500/–Mukesh Kumar Malviya,Varanasi" के नाम से बनवायें। अधिक ानकारी के लिए प्रधान संपादक से संपर्क करें।

र्तेः–1.शोध–पत्रिका में समस्त पद अवैतनिक हैं। सभी रचनाओं एवं शोधों में विचार लेखकों के हैं; तः उनके विचार से संपादक मंडल या शोध–पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस ोध–पत्रिका के प्रकाशन, संपादन, एवं मुद्रण में पूर्णतः सावधानी बरती गई है। किसी भी प्रकार की ्रुटि महज मानवीय भूल मानी जाये। त्रुटि हेतु संपादक, मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे। किसी भी विवाद ा क्षेत्राधिकार न्यायालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) होगा।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रण, प्रकाशन, संपादक द्वारा चाँद, जिला–छिन्दवाड़ा से प्रकाशित एवं सूर्या बुक ण्ड फार्म कम्प्यूटर सेन्टर, लंका, बी0एच0यू0, वाराणसी से मुद्रित।

Bighanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

CONTENTS

1.	DOMESTIC VIOLENCE IN INDIA: AN OVERVIEW *Manju Arya	1–6
2.	Corporate Social Responsibility in India *Dr. Krishna Mukund	7–13
3.	भारत में डॉ0 अम्बेडकर का अनुसूचित जाति सशक्तीकरण और अस्पृश्यता की समस्या पर–सामाजिक न्याय अनुप्रयोग *डा0 अमिता रानी	14–20
4.	भारतीय मध्यमवर्गीय हिन्दू पारम्परिक परिवारों पर आधुनिकता का प्रभाव *डा0 आनन्द तनुजा	21–26
5.	झारखण्ड के मुण्डा जनजाति पर आधुनिकीकरण का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। (राँची नगर के संदर्भ में) *डॉ0 गंगा केवट	27–30
6.	गाँधी दर्शन की प्रमुख विशेषताऐं *वीणा शुक्ला	31–33
7.	कोशी क्षेत्र में बाढ़ की समस्या एवं बाँध निर्माण : "एक ऐतिहासिक अध्ययन" *मो0 रफत परवेज	34–36
8.	रेणु की कहानियों में लोक–संस्कृति *डॉ0 चन्दन कुमार सिंह	37–38
9.	Child Labour and its Socio - Economic Determinants: A Case Study of Nalanda District *Prativa Kumari	39–46
10.	बदलते शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षकों की भूमिका *डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे	47–49

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

बदलते शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षकों की भूमिका

*डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बी०एड० विभाग कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के, जौनपुर

प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षक की कल्पना चिन्तन करने के बजाय, चिन्तित रहने वाले एक मनुष्य के रूप में की जा सकती है। अधिकांश अभिभावकों को लगता है कि उनके बच्चों को पढ़ाने की पूरी जिम्मेदारी शिक्षकों की ही है। सरकारी विद्यालयों मे पढ़ाने वाले शिक्षक यह महसूस करते हैं कि इन विद्यार्थियों के अभिभावक अपने बच्चों पर तनिक भी ध्यान नहीं देते हैं जबकि निजी विद्यालयों के शिक्षकों के ऊपर बेहतर प्रदर्शन करने का दबाव होता है। निजी विद्यालयों के शिक्षकों को कम वेतन मिलने के कारण तनावपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड रहा है। शिक्षक एक ऐसा सामाजिक प्राणी है जो शैक्षिक प्रशासन के भय युक्त वातावरण में जीता है और विद्यालय में बच्चों के लिए 'भयमुक्त माहौल' बनाने का रचनात्मक काम करता है। वह विद्यार्थियों को सवाल पूछने और जबाब देने के लिए प्रेरित करता है। अध्यापकों को कई अवसरों पर अधिकारियों की फटकार, अभिभावकों द्वारा दुर्व्यवहार एवं छात्रों के अनुशासनहीनता का शिकार होना पड़ता है। वह शिक्षाविदों की बुनी भूलभुलैया की प्रयोगशाला में लम्बे समय से अपने धैर्य की परीक्षा दे रहा है। बच्चों को अपने सामने परीक्षा से भयमुक्त और पढ़ाई की जिम्मेदारी से मुक्त होते हुए देख रहा है। उसे बच्चों को शिक्षा बिना किसी दण्ड एवं दबाव के देना है। विद्यार्थियों को भी इस बात की जानकारी रहती है कि हम कितना भी शरारत करेंगे, शिक्षक हमें दण्ड नहीं देंगे परिणामस्वरूप अधिकांश विद्यालयों में अनुशासनहीनता देखने को मिल रही है।

महिला शिक्षकों की भी अपनी समस्यायें हैं। उन पर घर की तमाम जिम्मेदारियों के कारण उनको खुद पढने का समय नहीं मिल पाता। नये ज्ञान की अपूर्णता के कारण उनमें कक्षा में अच्छा प्रदर्शन का अभाव रहता है जिसके कारण वे तनावग्रस्त रहती हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आज शिक्षा के बदलते स्वरूप और भारतीय शिक्षा प्रणाली को देखते हुए इस पर गम्भीर विचार–विमर्श की आवश्यकता है कि शिक्षा क्या है और वह कौन सा परिवेश है जिसमें शिक्षा बदल रही है। शिक्षा के इस बदलते परिवेा में शिक्षकों के क्या कर्त्तव्य होने चाहिए। देखा जाय तो जैसे ही मनुष्य अपनी प्राकृतिक अवस्था से निकलकर सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में संगठित हुआ, शिक्षा उसका अभिन्न अंग बन गई। प्रारम्भिक अवस्था में जहाँ मनुष्यों की प्रमुख आवश्यकता भूख मिटाना, अपने जीवन की रक्षा करना तथा इस दुनिया के बारे में जानकारी प्राप्त करना था। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो हमारे मन में ज्ञान के प्रति अनुराग उत्पन्न करे। शिक्षा मानसिक तथा शारीरिक समस्याओं को दूर रखने के साथ–साथ आध्यात्मिक पूर्णता भी प्रदान करती हैं। यह जीवन में सन्तोष और स्थिरता को जन्म देती है। साथ ही व्यक्ति को नवीनीकृत करते हुए उसे भविष्यद्रष्टा, समकालीन और नए विचारों से परिपूर्ण भी करती है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में प्राचीन शिक्षा प्रणाली से अत्यधिक परिवर्तन परिलक्षित होता है। शिक्षा में इतनी विषमता पहले कभी नहीं थी जितनी उदारीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में दिखती है। एक तरफ कुछ विद्यालय बहुत महंगे है तथा दूसरी ओर अधिकतर ऐसे विद्यालय है जहाँ न पर्याप्त बुनियादी सुविधाएं हैं, न विद्यार्थियों के अनुपात में शिक्षक। व्यावसायिक पाठ्यक्रम वाले कालेजों में नामांकन को लेकर मारामारी मची रहती है क्योंकि इन पाठ्यक्रमों से अच्छे कैरियर का रास्ता खुलता है। इन कॉलेजों में प्रवेश पाना पैसे की ताकत पर निर्भर करता है। इन परिस्थितियों ने समाज को प्रभावित करना और बदलना शुरू कर दिया। नब्बे के दशक में लागू की गई आर्थिक नीतियों के कारण स्वयं को कई जिम्मेदारियों से मुक्त करना शुरू कर दिया और राज्य के द्वारा संचालित अनेक क्षेत्रों को बाजार के हवाले कर दिया। परिणामस्वरूप, शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण की बाढ़ सी आ गई। बड़े शहरों से लेकर छोटे कस्बों और गाँवों तक प्राइवेट विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की भरमार हो गई। शिक्षा अब सरकारी नीतियों से तय न होकर बाजार के नियमों से संचालित होने लगी। आज के दौर में शिक्षकों का कर्त्तव्य और बढ़ गया है। उपरोक्त परिस्थितियों को देखते हुए प्रस्तुत अध्ययन समीचीन एवं प्रासंगिक है।

अध्ययन का उद्देश्य: प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।
2. विद्यालय के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।
3. समाज के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।
4. ज्ञान परम्परा एवं उसके मूल्य–मर्यादाओं के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।

1. विद्यार्थियों के प्रति कर्त्तव्य

शिक्षक का प्रथम कर्त्तव्य विद्यार्थियों को सुशिक्षित करना है। सुशिक्षा का प्रमुख स्तर है पाठ्य–विषय का समुचित ज्ञान कराना, यानी उन्हें विषयवस्तु के तथ्यों, संकल्पनाओं, परिभाषाओं, सिद्धान्तों आदि की सम्यक जानकारी देना तथा समझदारी विकसित करना। आज प्रायः हम जानकारी के स्तर से ऊपर नहीं उठ पाते। समझदारी विकसित करने में शिक्षक

VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

की रूचि कम होती है और विद्यार्थी की तो उससे भी कम। विद्यार्थी तो केवल परीक्षा में अच्छा अंक प्राप्त करना चाहता है उसका काम केवल जानकारी से ही चल जाता है। परीक्षा में प्रश्न भी केवल जानकारी से ही सम्बन्धित पूछे जाते है समझदारी के क्षेत्र से नही। शिक्षक का प्रमुख कर्त्तव्य है–विद्यार्थी को अपने विषय का 'विद्वान' बना देना। ऐसी विद्वता तब आती है जब विद्यार्थी मे जानकारी और समझदारी से भी आगे बढकर समालोचनात्मक और विवेचनात्मक क्षमता विकसित होती है। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी को स्वतंत्र अध्ययन, चिंतन, मनन के लिए प्रेरित किया जाय। उसके सामने चुनौतीपूर्ण प्रश्न रखे जाय, और उसे स्वतंत्र लेखन के लिए प्रोत्साहित किया जाय। इस प्रयास में वह ज्ञानार्जन के साथ–साथ ज्ञान सृजन में भी सक्षम हो पाएगा। विद्यार्थी को इस स्तर तक ले आ देना जहाँ वह स्वप्रयास से ही ज्ञानार्जन और ज्ञानसृजन के मार्ग पर आगे बढ सके, यही सुशिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है। विद्यार्थी के मन में विद्यार्जन के प्रति ऐसी ललक पैदा कर देना तभी सम्भव होगा जब स्वयं शिक्षक के मन में भी ज्ञान के प्रति वही उत्साह और निष्ठा हो। एक अच्छा शिक्षक जीवन पर्यन्त विद्यार्थी होता है। कहा भी गया है कि एक जलता हुआ दीपक ही दूसरे दीपक को प्रज्वलित कर सकता है।

किसी एक विषय का भलीभांति ज्ञान प्रदान करके विद्यार्थी को उस विषय में पारंगत बना देना शिक्षा व्यवस्था और शिक्षक के दायित्व का एक स्तर है। पर इस प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता का विकास करना उसका उच्चतर स्तर है। समय के साथ विषय–विशेष का ज्ञान तो बदलता रहता है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि के क्षेत्र में यह परिवर्तन अधिक गतिमान होता है। आज का सीखा हुआ ज्ञान कुछ ही वर्षों में अप्रासंगिक हो जाता है। पर बौद्धिक कौशल जीवन पर्यन्त हमारा साथ देता है। इसके सहारे हम किसी भी नए विषय का ज्ञान अर्जित कर सकते है। केवल ज्ञान और विद्या के क्षेत्र में ही नहीं, विकसित बुद्धि वाले लोग जीवन के किसी भी क्षेत्र में सामने आने वाली समस्यायों का सही विश्लेषण कर सकते हैं, उनका समुचित समाधान ढूंढ सकते हैं, और भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकते है। ऐसे बुद्धिमान, सुयोग्य और सक्षम व्यक्तियों का निर्माण करना ही उच्च शिक्षा के गुणवत्ता की सच्ची कसौटी है। बौद्धिक विकास के साथ–साथ विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण करना तथा उनकी सामाजिक, नैतिक चेतना का विकास करना शिक्षकों के दायित्वों का एक प्रमुख आयाम है। विश्वविद्यालयों से उच्च शिक्षाप्राप्त विज्ञजनों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने ज्ञान और कौशल द्वारा समाज का हित करेंगे, उसके उत्थान में सहायक होंगे। पर सामाजिक–नैतिक चेतना के अभाव में वे केवल अपनी व्यक्तिगत स्वार्थसिद्धि के प्रति ही सचेष्ट रहते है। ऐसे स्वार्थ प्रेरित और स्वकेन्द्रित लोग देश को, समाज को कुछ दे नहीं पाते। उल्टे अपनी बौद्धिक क्षमता और चतुराई से समाज का शोषण ही अधिक करते हैं। अपनी स्वार्थ–सिद्धि के लिए वे समाज का अहित करने में भी कोई संकोच नहीं करते।

2. विद्यालय के प्रति कर्त्तव्य

शिक्षक विद्यालय का वेतन भोगी कर्मचारी होता है। विद्यालय उसे आजीविका देती है साथ ही एक उच्च स्तर का सामाजिक दर्जा भी देती है। विद्यालय का शिक्षक होने के कारण ही उसे सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती है। अतः यह अपेक्षित है कि उसके मन में अपनी संस्था के प्रति कृतज्ञता का भाव हो। इस भाव से प्रेरित व्यक्ति निष्ठापूर्वक संस्था की सेवा करेगा, उसके उद्देश्यों को आगे बढ़ायेगा और संस्था के उत्थान में अपना पूर्ण योगदान करेगा। इस सेवाभाव और निष्ठाभाव से प्रेरित शिक्षक संस्था के हित को अपने हित के ऊपर रखेगा। कोई भी ऐसा काम नहीं करेगा जिससे संस्था की गरिमा को आंच आती हो। संस्था के प्रति कर्त्तव्यों का दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु है, अनुशासन। संस्था द्वारा निर्दिष्ट और अपेक्षित सभी कामों को पूरी लगन और ईमानदारी से करना शिक्षक का नैतिक कर्त्तव्य है। इन कामों में शैक्षणिक और शिक्षणेतर दोनों तरह के काम शामिल होते हैं। प्रत्येक संस्था के अपने नियम–कानून, काम करने के तौर–तरीके होते हैं। संस्था आशा करती है कि उसके कर्मचारियों का आचरण इनके अनुरूप होगा। इसी प्रकार संस्था के कर्मचारियों, अधिकारियों और शिक्षकों में छोटे–बड़े का एक पदानुक्रम होता है। इसकी मर्यादाओं का अनुपालन करना भी शिक्षकों का कर्त्तव्य होता है। यह उनके हित में भी है क्योंकि आज जो कनिष्ठ है कल वही वरिष्ठ होगा। जो अपने से वरिष्ठ जनों को सम्मान देता है, वही आगे चलकर अपने से कनिष्ठ लोगों का सम्मान पाता है।

3. समाज के प्रति कर्त्तव्य

विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था एक सामाजिक संरचना है। इसे समाज ने अपनी कुछ महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थापित किया है। इसमें प्रमुख हैं, समाजतंत्र को सुचारू रूप से चलाते रहने के लिए विभिन्न प्रकार के ज्ञान–कौशल से युक्त व्यक्तियों का सृजन करना, ऐसे लोगों को तैयार करना जो सामाजिक–आर्थिक विकास को आगे बढा सकें, उसे अधिक गतिमान बना सकें, और इसमें आने वाले नयी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकें। इसके लिए आवश्यक है कि विश्वविद्यालय से निकले उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों की बौधिक क्षमता एवं कार्यकुशलता के साथ–साथ सामाजिक–चेतना भी विकसित हो, वे समाज को अपना समझें, अपने सामाजिक दायित्वों को जाने और स्वीकार करें और जिनके मन में अपने ज्ञान–कौशल से एक बेहतर समाज बनाने का उत्साह हो। ऐसे उच्चकोटि के प्रबुद्ध, सक्षम और संवेदनशील 'मानव संसाधन' का विकास करना विश्वविद्यालय और उसके शिक्षकों का प्रमुख सामाजिक दायित्व है। सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से यह आवश्यक है कि विश्वविद्यालय में पठन–पाठन के विषय और शोध कार्य हमारे अपने समाज की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को ध्यान में रखकर तय किए जाये। वैसे तो ज्ञान–विज्ञान का एक बड़ा भाग सार्वभौमिक

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

होता है पर उसमें बहुत कुछ ऐसा भी होता है जो हर समाज अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करता है। नयी पीढ़ी को देने के लिए इस विशाल ज्ञान भण्डार से क्या चयनित किया जाता है और उन्हें किस रूप में प्रस्तुत किया जाता है यह भी देश–काल में मान्य सामाजिक–सांस्कृतिक दर्शन से प्रभावित होता है। शिक्षकों का एक अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक कर्त्तव्य सामाजिक गतिविधियों की निष्पक्ष, नीतिसम्मत और विवेकपूर्ण समालोचना करना है। अपने ज्ञान और तर्कशक्ति के द्वारा ये इन गतिविधियों के कारकों को, उनके छिपे हुए पहलुओं को और उनके दूरगामी परिणामों को देख–समझ सकते हैं और उन्हें उजागर कर सकते हैं। आज के जटिल समाज में प्राय आर्थिक और राजनैतिक शक्तियाँ अपने निहितार्थ को पूरा करने के लिए लोक–लुभावने नारों और कार्यक्रमों से सामान्य जनता को भ्रमित करने का प्रयास करती रहती हैं। इनसे जनता को आगाह करना और लोकहित के सजग प्रहरी के रूप में काम करना भी प्रबुद्धजन का दायित्व है। लोकतंत्र की सफलता के लिए बुद्धिजीवियों द्वारा सामाजिक समालोचना का यह दायित्व निभाना नितांत आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक है कि विद्वानों और शिक्षकों की योग्यता एवं निष्पक्षता में सामान्यजन का विश्वास हो।

4. ज्ञान परम्परा एवं उसके मूल्य–मर्यादाओं के प्रति कर्त्तव्य

मानव सभ्यता के विकास क्रम में सृजित ज्ञान के विशाल ज्ञानकोष के संरक्षक और संवाहक विश्वविद्यालय के विद्वान शिक्षक ही हैं। इस कोष को अक्षुण्ण बनाये रखना, इसकी अभिवृद्धि करना, उसे नयी धाराओं, उपधाराओं में प्रवाहित करना और उसकी गरिमा को बनाये रखना शिक्षकों का परम धर्म है। अपनी वृत्ति को इस परम्परा के प्रति समर्पण के पवित्र भाव से देखने में, और उसे केवल जीविकोपार्जन का माध्यम के रूप में देखने में जमीन–आसमान का अंतर है। ज्ञान–परम्परा के अपने विशिष्ट और उत्कृष्ट मूल्य हैं। इन मूल्यों के अनुरूप आचरण करना सभी विद्वानों, शिक्षकों एवं शोधकर्ताओं का दायित्व है।

ज्ञान परम्परा का पहला मूल्य है–बौद्धिक ईमानदारी। इस मूल्य के कई भाव हैं। इनमें एक है, किसी भी ज्ञान, विचार अथवा सिद्धान्त की प्रामाणिकता को सुनिश्चित करके, उसे भली–भांति सत्यापित करके ही उसका प्रतिपादन करना। तथ्यों से छेड़छाड करना, अपने अनुकूल तथ्यों को चुनना और अन्य की जानबूझ कर अनदेखी कर देना, बौद्धिक बेईमानी है। बौद्धिक ईमानदारी से ही मिलता–जुलता ज्ञान परम्परा का एक दूसरा मूल्य है, बौद्धिक और वैचारिक खुलापन। एक ही विषय पर दृष्टि–भेद के कारण अलग–अलग विद्वानों के मत भिन्न होते हैं। अपने विचारों से भिन्न विचारों को भी उचित आदर और महत्व देना एक अच्छे विद्वान का लक्षण है। अपने किसी विचार या शोध में त्रुटि सिद्ध हो जाने पर, या उससे बेहतर विचार सामने आ जाने पर, अपनी गलती या कमी को सहर्ष और शालीनतापूर्वक स्वीकार कर लेना, वैचारिक खुलापन है। विद्या और ज्ञान निरंतर गतिमान धारा की भांति होते हैं। पुराने और स्थापित सिद्धान्त, विचार, मत, शास्त्र संशोधित होते रहते हैं एवं परिवर्तित होते रहते हैं।

विद्या से परिष्कृत व्यक्तित्व का एक प्रमुख गुण है–विनम्रता। संस्कृत का प्रसिद्ध नीति–वाक्य है:

विद्या ददाति विनयम्। विद्यया न प्रमदितव्यम्।

अपने ज्ञान का अहंकार विद्वानों का सबसे बड़ा दुर्गुण और शत्रु है। ऐसे अहंवादी जन आत्मप्रशंसा और आत्मतुष्टि में ही निमग्न रह जाते हैं। अपने को सर्वज्ञ मानकर दूसरों को अपने से तुच्छ समझने लगते हैं। वास्तविक विद्या प्रेमी वह है जो विद्यार्थी भाव से सदैव और सबसे सीखता रहता है और अपने ज्ञान–भंडार की अभिवृद्धि करता रहता है। सभी बड़े विद्वानों के व्यक्तित्व में विनम्रता का भाव परिलक्षित होता है।

निष्कर्ष–बदलते शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आज निःसन्देह शिक्षा के क्षेत्र में विषमतायें बढ़ी हैं। छात्र अनुशासनहीन होते जा रहे हैं। पाठ्यक्रम में जटिलता आ रही है, प्रशासन एवं प्रबन्धक के प्रति जबाबदेही भी बढ़ती जा रही हैं। ऐसी परिस्थिति में यदि शिक्षक अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन ईमानदारीपूर्वक करता रहे तो निश्चित रूप से अनेक जटिलताओं के बावजूद भी शिक्षा व्यवस्था उत्तम स्तर की हो जायेगी तथा विद्यार्थी भी पठन–पाठन में पूर्णरूप से रूचि लेने लगेंगे। इसके लिए शिक्षक द्वारा उपरोक्त सभी क्षेत्रों में कर्त्तव्यों का निर्वहन करना होगा। शिक्षक सर्वप्रथम अपने विद्यार्थियों के प्रति कर्त्तव्य का निर्वहन करें जिससे छात्र रूचिपूर्वक विषयवस्तु का गहनता से अध्ययन करें एवं ज्ञान के साथ–साथ समझ भी विकसित कर सके। विद्यालय, समाज, ज्ञान परम्परा और उसकी मूल्य–मर्यादाओं के प्रति कर्त्तव्यों के निर्वहन से शिक्षक अपने योग्यता एवं निपुणता से आपस में सभी लोगों के साथ अन्तर्क्रिया द्वारा एक स्वस्थ शैक्षिक वातावरण का निर्माण करने में सफल हो सकेंगे।

सन्दर्भ

अग्निहोत्री, रवीन्द्र (1973) : 'भारतीय शिक्षा : दशा तथा दिशा' केदारनाथ–रामनाथ एण्ड कम्पनी मेरठ। 2.घनकर, रोहित (2004):'शिक्षा और समझ' आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला,' हरियाणा। 3.पाण्डेय, रामशकल (1983):'शिक्षा दर्शन' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा। 4.पाण्डेय, रामशकल (2003):'उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा। 5.पाण्डेय, रामशकल (2005):'शैक्षिक निबन्ध' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा। 6.जर्नल :'शैक्षिक परिसंवाद' Vol. 2, No. 2 जुलाई 2012 काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी। 7.Website : www. educationmirror.org 8.www. jansatta.com

●●●●●

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATIC
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

ISSN 0970-1745
SLRF Impect Factor 2.364

Shodh

An International Refereed & Peer-Reviewed Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

डॉ० सुरेन्द्र पाण्डेय

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCAT
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Year-35 Vol-96 January, 2018 ISSN 0970-1745
UGC Approved No. 42069

Shodh

(A Refereed Research Journal, Law & Multidisciplinary)

EDITOR IN CHIEF
Dr. Surendra Pandey, Varanasi

EDITOR
Dr. Shailendra kumar

Prof. Gelina Rousseva

EDITORIAL BOARD
Dr. Mahmoud Sobhi
Al Jouf University, Sakaka (KSA)

Kedar Nath Yadav
Assistant Professor, R.S.K.D. PG College, Jaunpur, U.P. India

Shri Sachin Awasthi
Department of Economics (M.P.)

Dr. Manohar Chitre
Asst. Professor Commerce, Mata Jijabai Girls' P.G. College, Moti Tabela, Indore.

Prof. Rajkumar Singh
F.M.S., Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.)

Prof. Rajeswar Pal
Al Jouf University, Sakaka (KSA)

Prof. Sudhaker Singh
Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.

Princ...
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUC...
Bignamkanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

CONTENTS

1.	Problems of Enforcement of Pollution Control Legislations in India -An Appraisal and Suggested Reforms ***Dr. Dinesh Kumar Gupta**	1–10
2.	आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के विकास में सामाजिक परिस्थितियों का योगदान ***कु. अणिमा शुक्ला**	11–13
3.	Knowledge Management and Learning in Organizations ***Kedar Nath Yadav**	14–22
4.	परिवार नियोजन कार्यक्रम का सामाजिक जीवन पर प्रभाव ***Mukesh Kumar Malviya**	23–25
5.	An Analysis of Effectiveness of Viral Marketing Campaigns ***Sadhana Tiwari**	26–29
6.	GIRISH KARNAD'S *HAYAVADANA*: A CRITIQUE ***Talluri Mathew Bhaskar**	30–33
7.	भारत में ब्रिटिश शिक्षा का उद्भव एवं विकास ***डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे**	34–35
8.	हड़प्पा एवं वैदिक सभ्यता के समान तत्व ***डॉ0 बिन्दू त्रिपाठी**	36–38
9.	झारखण्ड राज्य के उराँव जनजाति में राजनीतिक चेतना का विकास ***डॉ० संतोष उराँव**	39–43
10.	Status of Women and Measures for eradication of violence against women ***Prativa Kumari**	44–49
11.	आधुनिकता - ऐतिहासिक विवेचन ***वीणा शुक्ला**	50–52

●●●●●

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA
Jnanikanagar yari Anandpura Roa
Aurangabad (Bihar) 824101

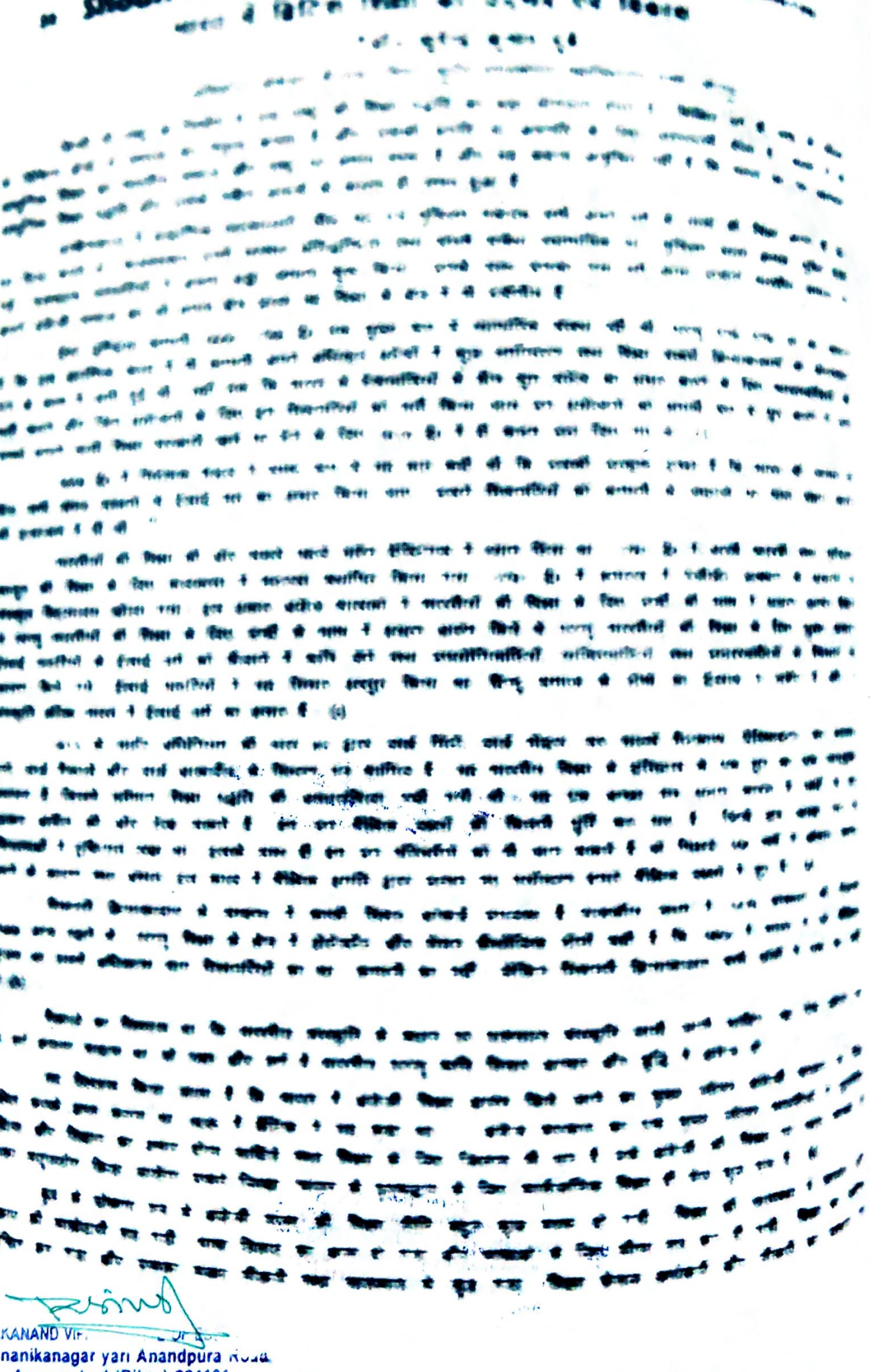

भारत में ब्रिटिश शिक्षा का उद्भव एवं विकास

VIVEKANAND VI...
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Shodh

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Signanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Shodh

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Year 35 Vol 97 Feb 2018 ISSN 0970 1745

Shodh

(A Refereed Research Journal, Law & Multidisciplinary)

EDITOR IN CHIEF

Dr. Surendra Pandey, Varanasi

EDITOR

Dr. Shailendra Kumar

Prof. Galina [illegible]

EDITORIAL BOARD

Dr. Mohammad [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Dr. [illegible]

[illegible]

Prof. [illegible] Singh

[illegible]

Prof. [illegible] Pal

[illegible]

Prof. [illegible] Singh

[illegible]

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATIC
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

CONTENTS

1. [illegible]
*Dr. [illegible] Kumar Gupta — [illegible]

2. [illegible] in West Bengal: a critical analysis
*[illegible] Prasad Mishra — [illegible]

3. Violence against Women in India: An Overview
*Dr. [illegible] — [illegible]

4. [illegible] of [illegible]: An Analytical Study
*Pratima Pandey — [illegible]

5. Use of ICT for Developing Conceptual Understanding in Chemistry
*Prashant [illegible] — [illegible]

6. This paper investigated the [illegible]
*Vipin — [illegible]

7. [illegible]
*[illegible] — [illegible]

8. [illegible] and Policy of Indian Government
*Dr. [illegible] — [illegible]

9. An Observation of Political Participation of Dalit Women in Panchayati Raj Institutions
*[illegible] Kumari — [illegible]

10. [illegible]
*[illegible] — [illegible]

11. [illegible]
*[illegible] — [illegible]

12. [illegible]
*[illegible] — [illegible]

13. [illegible]
*[illegible] — [illegible]

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATIO[N]
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Shodh

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA
Bishunpur Sahagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

...ANAND VIPF INC
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Vol. XVIII
Number 1

ISSN 2319-7129
(Special Issue) February, 2018

EDU WORLD

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUC...
...gnanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

ISSN : 2319-7129

EDU WORLD

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. XVIII, Number - 1 February, 2018

(*Special Issue*)

Chief Editor

Dr. S. Sabu

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O., Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor

S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation

4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUC.
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

CONTENTS

Cultural Diversity in South Asia: Challenges and Prospects 1
Dr. Amandeep Kaur

Preferential Policy: Concept, Debates and Contestation in China. 7
Chandra Sen

The Role of Civil Societies in Promoting Good Governance in Bangladesh 16
Minati Kalo

Conversion of Waste into Energy : A Case Study of Qatar 25
Sonal Kumari

Corruption and its Challenges to the Governance in China 29
Sumanta Kumar Sahu

Women's Educational Policies During Soviet a Period : Historical Analysis 39
Dr. Mahashraddha Yadav

History in Transition: A Reflection on Women's Educational Attainment in Soviet Union 50
Dr. Mahashraddha

Engaging in the Field Work: A Fieldworker's Note on Methodological Exploration on Education and Women's Empowerment 56
Dr. Shashwat Kumar

Contesting Terrain of Marginality in Education: A Study of Women Empowerment and Education in Pratapgarh, Uttar Pradesh 61
Dr. Shashwat Kumar

Special Economic Zones-An In-Depth Analysis of SEZ distribution 68
Dr. Sonu Kumar Mishra

Water Security Challenges in North Eastern Part of India on Sharing Trans-Boundary River of Brahmaputra Between India and China 76
Md. Najibullah Singakhongbam and Hena Bari

Yogic Management of Diabetes 84
Dr. R. Lakshminarayana

India' Act East Policy: A Study of Mekong-Ganga Cooperation 90
Himanshu

Responsible Wildlife Tourism: A Theoretical Review 98
Mahender Reddy Gavinolla and Prof. Sampada Kumar Swain

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATI
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

अशोक द्वारा नियुक्त 'धर्ममहामात्र एक प्रदेयः विश्लेषणात्मक समीक्षा 194
डॉ. सोनी कुमारी

डॉ.- राही मासूम रजा के कृतित्व का सामान्य परिचय 198
डॉ. तब्बसुम खान

वैश्विक शान्ति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता 208
डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और आदिवासी 215
डॉ. तुंगनाथ मौआर

बिहार में महिला सशक्तिकरण में पंचायती राज की भूमिका 224
डॉ. पूनम कुमारी

NITI Aayog (National Institution for Transforming India) 229
Dr. Poonam Kumari

Women Empowerment in Present Scenario 233
Dr. Poonam Kumari

A Trend of Intra-Industry Trade: A Sino-Indian Case Study 238
Madhurendra Singh

Taxation System in India 243
Madhurendra Singh

E-Banking 255
डॉ. पीयूष कुमार गुप्ता

राजनैतिक कारण और बाल अपराध 264
डॉ. तन्द्रा शरण

बाल अपराधी या बालापचार बच्चों का माता-पिता के साथ सम्बन्ध 267
डॉ. तन्द्रा शरण

प्रेमचंद के कथा-साहित्य में शिक्षा पद्धति की पड़ताल 270
डॉ. अनिल शर्मा

Investigation of Psychological Factors Underlying Peptic Ulcer 274
Dr. Nishi Bijiya

Synthesis of Imine Bond Containing Insoluble Polymeric Ligand and its Transition Metal Complexes, Structural Characterization and Catalytic Activity on Esterification Reaction 280
Dr. Prabhakar Kumar

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

वैश्विक शान्ति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता

डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे*

भूमिका

व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का ह्रास वैश्विक अशांति का प्रमुख कारण है। आधुनिक युग में शिक्षा आध्यात्मिक व नैतिक विकास प्रक्रिया के स्थान पर आर्थिक विकास की प्रक्रिया बन गयी है। शिक्षा के उद्देश्यो में आर्थिक विकास को प्रमुख स्थान दिया जा रहा है। पाठ्यक्रम में केवल वैज्ञानिक व तकनीकी शिक्षा को ही प्रधानता दी जा रही है तथा अध्यात्म, धर्म व नैतिकता को महत्व नहीं दिया जा रहा है जिसके कारण लोगों में अनुशासनहीनता एवं असन्तोष की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वर्तमान वैश्विक परिवेश में नैतिकता व मानवीयता का ह्रास हुआ है। आधुनिक भौतिकवादी युग में मानव ने मानसिक शान्ति ,परस्पर सद्भाव तथा एकाग्रता को खो दिया है जिसके कारण धार्मिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों में ह्रास हो रहा है।

आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी युग में एक ओर जहाँ मनुष्य के सुख– सुविधाओं में वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर आणविक बमों के आविष्कार ने सम्पूर्ण मानव के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। विकास की इस तीव्र आँधी ने जहाँ जीवन के अधिकांश मानवीय मूल्यों, आस्थाओं और प्रतीकों पर प्रहार किया है, वहीं दूसरी तरफ सम्पूर्ण पीढ़ी को परम्परा व आधुनिकता , जड़ता एवं गतिमयता के द्वन्द्व में भटकने के लिए छोड़ दिया है। लोगों में मानवीय , आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्य समाप्त हो रहा है और भौतिकवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है परिणामस्वरूप मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है।

आज व्यक्ति के जीवन में भौतिक सुख–सुविधा एवं समृद्धि के नाम पर बहुत कुछ है, ज्ञान एवं कौशल की कमी नहीं है इसके बावजूद भी चारो तरफ अशान्ति, अराजकता एवं आतंकवाद का साम्राज्य व्याप्त है। मनुष्य, मनुष्य से ही भयभीत होने लगा है तथा लोगों का एक दूसरे पर विश्वास नहीं रह गया है। यदि गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि वर्तमान सामाजिक परिवेश की सभी समस्याओं की जड़ नैतिक मूल्य शिक्षा विहीन शिक्षा प्रणाली ही है। पहले शिक्षा का उद्देश्य मुक्ति होती थी चरित्र निर्माण होता था किन्तु आज मुक्ति, आध्यात्मिकता एवं चरित्र निर्माण की बात करना लोग अप्रासंगिक मान रहे हैं। वर्तमान समय में मनुष्य अपनी उन नैतिक मूल्यों से विमुख हो रहे हैं जिसे अंगीकरण करने पर न केवल अपना कल्याण अपितु पीड़ित मानवता को भी शान्ति प्रदान की जा सकती है। नैतिक मूल्यों के अभाव में आज के छात्र एवं शिक्षक अनैतिक गतिविधियों में लिप्त है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

विद्यालयों में हम छात्रों को विविध विषयों का ज्ञान प्रदान करते हैं किन्तु बालकों की आदतों, उनके व्यवहार, उनके आचरण, उनके स्वभाव आदि के परिमार्जन के लिए हम कोई उपाय नहीं करते। हमारा वर्तमान

*प्रवक्ता बी0एड0 कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के जौनपुर

..KANAND VI... ...EDUCA..
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

पाठ्यक्रम नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों की जानकारी ठीक से प्रदान नहीं करता। अतः वैश्विक शान्ति के लिए नैतिक मूल्यों की शिक्षा की प्रत्येक जागरूक नागरिक को आवश्यकता प्रतीत होती है।

औद्योगीकरण ने परिवार के एवं समाज के ढाँचे में परिर्वतन कर दिया है। अतः अब नैतिक मूल्यों की शिक्षा का दायित्व केवल घर या समाज पर ही नहीं छोड़ा जा सकता। विज्ञान की प्रगति ने हमारे चारों ओर के वातावरण में परिर्वतन कर दिया है। जनतन्त्र ने सामाजिक आकांक्षाओं में भी परिर्वतन कर दिया है। आज के युवाओं मे उत्साह है, किन्तु इस उत्साह को उचित दिशा देने में वर्तमान शिक्षा प्रणाली अक्षम है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि हमारे नवयुवकों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा किसी स्तर पर नहीं दी जाती। नये परिवेश में नैतिक मूल्यों की शिक्षा और आवश्यक हो गई है।

नैतिक मूल्यों की शिक्षा किसी राष्ट्र के लिए ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए महत्वपूर्ण है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने से बालकों में सहिष्णुता, उदारता, सहयोग, समता, त्याग, संयम, विश्व–बन्धुत्व इत्यादि गुणों का विकास किया जा सकता है। वैश्विक शान्ति के लिए बालक का सर्वांगीण विकास आवश्यक है। वैश्विक शान्ति के लिए मानवीयता प्रथम आधार है क्योंकि वैश्विक शान्ति विश्व कल्याण के लिए है और विश्व कल्याण के लिए मानवीयता व मानव मात्र का कल्याण आवश्यक है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा के माध्यम से ही विद्यार्थियों में आत्मानुशासन की प्रवृति का विकास किया जा सकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

नैतिक मूल्यों की अवधारणा का अध्ययन करना।

नैतिक मूल्यों को विकसित करने हेतु उपाय का अध्ययन करना।

वैश्विक शांति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

नैतिक मूल्य की अवधारणा

वे निश्चित मानदण्ड जिसके आधार पर व्यक्ति, वस्तु, व्यवहार व घटना का अच्छा–बुरा,सही–गलत के रूप में परख की जाती है,मूल्य कहलाते हैं। मूल्य ही धर्म कहलाता है अर्थात धर्म उन शाश्वत मूल्यों का नाम है जिनकी मन, वचन, कर्म की सत्य अभिव्यक्ति से ही मनुष्य कहलाता है। धर्म का अभिप्राय मानवोचित आचरण संहिता है। यह आचरण संहिता ही नैतिकता है और इस नैतिकता के मानदण्ड ही नैतिक मूल्य हैं। नैतिक मूल्यों के अभाव में कोई भी व्यक्ति, समाज या देश निश्चित रूप से पतनोन्मुख हो जायेगा। नैतिक मूल्य मनुष्य के विवेक में स्थित, आन्तरिक व अन्तः स्फूर्त तत्व हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में आधार का कार्य करते हैं। नैतिक मूल्यों के कारण ही समाज में संगठनकारी शक्तियाँ व प्रक्रिया गति प्राप्त करती है और विघटनकारी शक्तियों का क्षय होता है विश्वबन्धुत्व की भावना, मानवतावाद, समता भाव, प्रेम और त्याग जैसे नैतिक गुणों के अभाव में विश्वशांति , अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, मैत्री आदि की कल्पना भी नहीं की सकती है।

हरबर्ट. जैसे शिक्षाशास्त्री तो सम्पूर्ण शिक्षा का उद्देश्य ही नैतिकता का विकास मानते हैं। यदि पढ़–लिखकर बालक सच्चरित्र न बन सका तो शिक्षा बेकार है। छात्र में अनुशासन , सत्यवादिता, सहयोग, भ्रातृत्व, धैर्य आदि गुणो का विकास नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा सम्भव है। परिवार, समाज, संस्कृति, राजनैतिक संस्थाओं

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Signanikanagar ... dpura Road
Aurangabad Bihar, 824101

के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास, शुभ एवं भद्र के लिए श्रद्धाभाव का विकास एवं अन्याय, द्वेष, विशेषाधिकार, दबाव आदि के विरोध का साहस नैतिक शिक्षा से ही सम्भव है।

नैतिक मूल्यों के प्रकार

प्रमुख नैतिक मूल्य निम्नलिखित है–

सत्य

वैश्विक शान्ति हेतु सत्य एक प्रमुख नैतिक मूल्य है। संसार में सत्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। आज लोगों में सत्य से दूर रहने की प्रवृत्ति है। यदि सत्य पर अडिग रहा जाय तो शान्ति सम्भव है। असत्य के मार्ग पर चलने के कारण ही लोगों का जीवन तनावग्रस्त है। प्राचीन समय में लोगों में यह विश्वास रहता था कि सत्य ही ईश्वर है। सत्य का तात्पर्य केवल सच बोलना ही नहीं वरन् विचार, वाणी और आचार में भी सत्य होना आवश्यक है। सत्य का अनुपालन धर्म, राजनीति, समाज एवं परिवार सर्वत्र होना चाहिए। व्यक्ति जब तक काम, क्रोध, लोभ, मोह के प्रभाव में रहेगा, वह सत्य का दर्शन नहीं कर सकता। जो स्वयं नैतिक रूप से शक्तिमान होता है, वही सत्य मार्ग पर चल सकता है।

अहिंसा

वैश्विक अशान्ति के प्रमुख कारणों में लोगों में व्याप्त हिंसा की प्रवृत्ति भी है। आज लोग छोटी–छोटी बातों पर भी हिंसा का मार्ग अपना लेते हैं जो विद्रोह का प्रमुख कारण बन जाती है। वैश्विक शान्ति की स्थापना के लिए अहिंसा रूपी नैतिक मूल्य को प्रमुख रूप से ग्रहण करना होगा। प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों, उपनिषदों, एवं मनुस्मृति आदि के अनुसार अहिंसा का अर्थ साधारणतः किसी प्राणी को कष्ट नहीं पहुँचाना एवं किसी का प्राण नहीं लेना है। जैन मत के अनुसार "सभी परिस्थितियों में सभी प्राणियों के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा हिंसा का वर्जन है।"

अहिंसा के बारे में महात्मा गाँधी जी का विचार था कि "यदि अहिंसा के पुजारी की सभी क्रियाओं के मूल में करूणा रहे, यदि वह क्षुद्र जीव को यथाशक्ति कष्ट पहुँचाने से बचता रहे और उसे बचाता रहे तथा इस प्रकार हिंसा के चक्कर से निरंतर दूर रहे तो फिर उसका विश्वास अहिंसा में अडिग हो जायेगा।" शत्रु से प्यार, बुराई के बदले भलाई और घृणा के बदले प्यार करने की भावना गाँधी जी के अहिंसा की कल्पना का तत्व था। उनकी अन्तर्दृष्टि थी कि यदि हम सत्य स्वरूप ईश्वर को पाना चाहते हैं तो हमें इसके लिए निश्चय ही अहिंसा का मार्ग अपनाना होगा।

प्रेम

वैश्विक शान्ति के लिए प्रेम रूपी नैतिक मूल्य भी अनिवार्यतः धारण करना होगा। हिंसा की प्रवृत्ति प्रेम के अभाव में ही उत्पन्न होती है। यदि हम लोगों के प्रति प्रेम का भाव रखें तो निश्चित ही अन्य लोगों का हमारे प्रति प्रेम का ही भाव रहेगा। आज भाई–भाई में भी सच्चे प्रेम का अभाव है जिसके कारण छोटी–छोटी बातों पर विवाद प्रारम्भ हो जाता है तथा कुछ लोग हिंसा का मार्ग चुन लेते हैं। जब लोगों में आपस में ही प्रेम का भाव नहीं है तो ऐसे लोगों से वैश्विक शान्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EL
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

नैतिक मूल्यों में धर्म का भी प्रमुख स्थान है। नैतिकता के लिए धर्म का वही स्थान है, जो जमीन में उगने के लिए जल का होता है। धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं है तथा यह हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाइयत से परे है। चूंकि विश्व के सभी मानव एक ही ईश्वर की सन्तान है अतः सभी मानव आपस में भाई–भाई हैं। सभी लोगों से नैतिकतापूर्ण व्यवहार करना ही सबसे बड़ा धर्म है। सच्चा धर्म यही शिक्षा देता है कि हमें ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे दूसरे को कष्ट पहुँचे। यदि सभी लोग इस धर्म का पालन करेंगे तो निश्चित रूप से वैश्विक शान्ति की स्थापना होगी।

ईमानदारी

नैतिक मूल्यों में ईमानदारी का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ईमानदारी एक ऐसा माध्यम है जिससे लोगों का विश्वास एक दूसरे पर बना रहता है। हमें अन्दर एवं बाहर दोनों रूप में ईमानदार रहना चाहिए। ईमानदारी से आत्मबल मजबूत होता है। कहा भी गया है "ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है (Honesty is the best Policy.)"

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु पाठ्यक्रम

नैतिक मूल्यों की उपस्थापना भी पाठ्यक्रम के माध्यम से ही सम्भव है। अन्धविश्वासों, संकुचित सिद्धान्तों तथा रूढ़िगत धार्मिक व्यापारों से ऊपर उठकर ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण हो जिसमें धर्म के आधारभूत सिद्धान्तों का निरूपण हो। धर्म वह है जो मनुष्य–मनुष्य में मेल स्थापित करता है। भेद, घृणा, वैमनस्य तथा शत्रुता उत्पन्न करने वाले सिद्धान्त कभी भी धर्म की श्रेणी नहीं आ सकते। इसलिए आज के यथार्थवादी युग में शिक्षा के लिए धार्मिक तथा नैतिक मूल्यों का आँचल छोड़ना श्रेयस्कर नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन से पाठ्यक्रम का जो स्वरूप निखरता है, उसमें शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर धर्म तथा संस्कृति, सामाजिक विषयों का अध्ययन, क्षेत्रीय भाषाएँ तथा उनका साहित्य, विज्ञान, वाणिज्य तथा कृषि सम्बन्धी विषयों के अतिरिक्त राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन देने वाले कार्यक्रम, शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन की योजनाएँ, स्थानीय आवश्कताओं के अनुरूप शिल्पीय, व्यावसायिक तथा औद्योगिक विषयों का समावेश वांछनीय है। अधिक जीवन्त, उपयोगी, व्यापक तथा सार्थक बनाने के लिए पाठ्यक्रम को इतना लचीला बना दिया जाय कि सहपाठ्यक्रम, पाठ्येतर तथा पाठ्यक्रमीय क्रियाकलापों एवं अध्ययनों का समायोजन अध्यापक परिस्थिति तथा आवश्कतानुकूल स्वयं कर सके। परीक्षोन्मुख पाठ्यक्रम एक जड़ एवं मृत भावना है जिसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु उपाय

विद्यार्थियों नैतिक मूल्यों के विकास के लिए नैतिक शिक्षा को भी एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाय और कुछ पुस्तकें निर्धारित कर दी जाय जिनके आधार पर नैतिक मूल्यों की शिक्षा भलीभाति दी जा सके।

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATI...
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर क्रमिक रूप में विकसित करना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर जिन गुणों के विकास पर अत्यधिक बल हो, उनमें माता–पिता, आचार्य एवं अपने से बड़ो के प्रति श्रद्धाभाव भी है। यह श्रद्धा एवं आदर ऊपरी एवं दिखावटी न होकर मन से हो। इसके लिए छात्रों को समय–समय पर कुछ नियमों की जानकारी देनी पड़ेगी तथा 'श्रवणकुमार', 'राजा हरिश्चन्द्र' इत्यादि नैतिक मूल्य प्रधाननाटक कक्षा के सम्मुख उपस्थित किया जाय।

माध्यमिक स्तर पर राष्ट्र एवं विश्व के प्रति तथा मानवता के प्रति श्रद्धाभाव जाग्रत करना होगा। इसके लिए देश–प्रेमी, बलिदानी, एवं राष्ट्र–भक्तों की जीवनियाँ पढ़नी होगी। ऐसी कहानियों का चयन करना होगा जिनके आधार पर देश–प्रेम का विकास हो सके। उन घटनाओं पर बल देना होगा जो देश एवं विश्व के कार्यों मे प्रमुख हैं।

उच्च स्तर पर छात्रों में अपने पूर्वार्जित प्रेम एवं श्रद्धा की मीमांसा करनी होगी। संसार के विभिन्न धर्मों मे व्याप्त एकता को ढूँढ़ना होगा। इसके लिए उन्हें बुद्ध, कन्फ्यूशियस, सुकरात, ईसा, शंकर, मुहम्मद, कबीर, नानक, गाँधी, विवेकानंद, अरविन्द, दयानन्द आदि की जीवनियाँ पढ़ाई जायें। संसार के धार्मिक ग्रन्थों में सार्वभौमिक तत्व को छात्र पहचाने। इसके लिए इन ग्रन्थों से चुने हुए अंश को उन्हें पढ़ना होगा। इस स्तर पर यह सिखाया जाय कि वे धर्म के नैतिक मूल्य को समझ सकें। उन्हें धर्म का दर्शन पढ़ाया जाय, धर्म के मान्य एवं आदर्श सिद्धान्तों की व्याख्या उनके समक्ष प्रस्तुत की जाय ताकि वे युगानुरूप सिद्धान्तों को व्यवहृत कर सकें।

आवश्यकता इस बात की है कि विद्यालय का सम्पूर्ण वातावरण नैतिकता से ओत–प्रोत हो जिससे छात्र नैतिक नियमों का पालन कर सकें और नैतिक सिद्धान्तों को व्यवहृत कर सकें।विद्यालय का कार्य कुछ क्षण के मौन से आरम्भ हो जिससे छात्र नैतिक नियमों का मनन करना सीखें। सरल कहानी के माध्यम से नैतिकता की शिक्षा दी जाय।

भारत सरकार के सन् 1959 में बम्बई के तत्कालीन राज्यपाल श्री श्रीप्रकाशजी की अध्यक्षता में नैतिक मूल्यों के शिक्षा की एक समिति नियुक्त की गई थी, जिसके अध्यक्ष के अतिरिक्त अन्य तीन सदस्य थे– राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति श्री जी० सी० चटर्जी, जम्मू–कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री फैजी और भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के संयुक्त सचिव श्री प्रेमकृपाल। इस समिति ने नैतिक मूल्यों की शिक्षा पर विस्तार में विचार किया और अपने अन्य प्रतिवेदनों के अतिरिक्त निम्नलिखित महत्वपूर्ण सुझाव दिये–

1. प्रारम्भिक स्तर

क. सामूहिक गायन के लिए प्रातः कुछ मिनटों के लिए छात्र सभा का आयोजन हो।

ख. भाषा शिक्षण के पाठ्यक्रम में सन्तों एवं धार्मिक नेताओं के जीवन व शिक्षा के विषय में सरल और रोचक कहानियों को सम्मिलित किया जाय।

ग. यथासम्भव श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रयोग करके छात्रों की नैतिक शिक्षा में रुचि जाग्रत की जाय विशेषतः सुन्दर चित्र, फिल्मस्ट्रिप, सुन्दर कलाकृतियों के रंगीन पुनर्मुद्रण, वास्तुकला के नमूने प्रस्तुत किये जाय।

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUC
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

विद्यालय की समय सारिणी में एक सप्ताह में दो घण्टे नैतिक शिक्षा के लिए रखे जाने चाहिए। इन घण्टों में विश्व के धर्मों की रोचक कहानियाँ कही जाय। धर्म के वाह्य आडम्बर को पृथक रखा जाय।

विद्यालयी कार्य के माध्यम से छात्रों में 'सेवा की भावना' एवं 'कार्य ही पूजा है' की भावना जाग्रत की जाय।

विद्यालय में आयोजित शारीरिक शिक्षा एवं खेल का उद्देश्य चरित्र निर्माण हो।

माध्यमिक स्तर

प्रातःकालीन सभा में दो मिनट का मौन रखा जाय। इसके बाद पवित्र पुस्तकों या श्रेष्ठ साहित्य से कुछ अंश पढे जाय। सामूहिक गायन को भी प्रोत्साहित किया जाय।

इतिहास और सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में विश्व के महान धर्मों की शिक्षाओं के मूलतत्व पढ़े जाय। भाषा शिक्षण या सामान्य शिक्षण में विभिन्न धर्मों के विषय मे कथाएँ सम्मिलित की जाय।

सप्ताह मे एक घण्टा नैतिक मूल्यों की शिक्षा के लिए पृथक से रखा जाय। इस कक्षा में विचार–विमर्श को प्रोत्साहित किया जाय। उपयुक्त वक्ताओं को भी आमंत्रित करके नैतिक शिक्षा पर व्याख्यान कराया जाय।

छुट्टियों में या विद्यालयी समय के अतिरिक्त संगठित रूप में समाज सेवा की जाए। इस सेवा का उद्देश्य हो–श्रम के प्रति निष्ठा, मानवता से प्रेम, देशभक्ति और आत्मानुशासन।

विद्यालय में छात्र की उपलब्धियों की जाँच करते समय आचरण एवं चरित्र के गुणों की परीक्षा अवश्य हो।

3. विश्वविद्यालयी स्तर

प्रातः विभिन्न समूहों में छात्र मौन–चिन्तन करें। ऐच्छिक रूप से अध्यापकों के निरीक्षण में यह कार्य हो।

'तुलनात्मक धर्म' में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की रचना की जाय और इसे महत्वपूर्ण विषय बनाया जाय।

उपसंहार

उपरोक्त विवरण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वैश्विक शान्ति के लिए नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता अत्यधिक है। यदि सभी व्यक्तियों में नैतिक मूल्यों का समावेश कर दिया जाय तो लोगों में सकारात्मक विचार उत्पन्न होगा। वे आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे, कहीं भी हिंसा का भाव नहीं रहेगा तथा सभी लोगों में स्वार्थ की भावना त्याग कर परमार्थ की भावना जाग्रत होगी। केवल एक व्यक्ति में ही नैतिक मूल्यों का समावेश होने से ही वैश्विक शान्ति सम्भव नहीं है। वैश्विक शान्ति की स्थापना के लिए स्वयं में नैतिक मूल्यों को ग्रहण करने के पश्चात् अन्य लोगों में भी नैतिक मूल्यों का समावेश कराना होगा। यह कार्य वही कर सकते हैं जो नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हों। यदि हमारे अन्दर नैतिक मूल्यों का अभाव रहेगा तो हम अन्य लोगों में नैतिक मूल्य का विकास नहीं करा सकेंगे। पहले हम स्वयं के अन्दर नैतिक मूल्य धारण करें, उसके पश्चात अन्य लोगों को नैतिक मूल्य धारण करने हेतु प्रेरित करें तभी वैश्विक शांति की स्थापना होगी जिससे

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDU.
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

सम्पूर्ण विश्व में भाईचारा, निःस्वार्थ की भावना, सौहार्द्र एवं प्रेम का वातावरण विकसित होगा तथा प्रत्येक मानव शान्तिपूर्वक खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकेगा ।

नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा ही वैश्विक शान्ति सम्भव है क्योंकि इसके द्वारा ही व्यक्ति में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, लडाई–झगडे इत्यादि कुप्रवृत्तियों को रोका जा सकता है। यदि सभी जीवों में एक ही ईश्वर की सत्ता है तो मानव जाति में जाति–भेद, रंग–भेद, नस्ल–भेद, लिंग–भेद, ऊँच–नीच भेद अनुचित है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा बालकों में भेद–भाव रहित विश्व–बन्धुत्व की भावना का विकास उत्पन्न करके मानव मात्र की एकता पर बल तथा मानव जाति के अधिकतम कल्याण की प्रवृत्ति का विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गाँधी, महात्मा : 'यंग इण्डिया' 15 मार्च 1926।

गाँधी, मोहन दास करमचन्द (1989) : 'मेरे सपनों का भारत', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

गुप्ता, राम बाबू(1993) : 'महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री' रतन प्रकाशन मन्दिर, आगरा ।

धनकर, रोहित (2004) : 'शिक्षा और समझ' आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला , हरियाणा ।

पाण्डेप रामशकल (2005) : 'शैक्षिक निबंध' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

पाण्डेय, एच0 एल0 (2000) : 'गांधी, नेहरू, टैगोर एवं अम्बेडकर' प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद।

वार्ष्णेय, सोनी : 'नवनीत' फरवरी 2014

Website:- : www.navneethindi.com

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar vari Anandpura Road
Aurangabad Bihar 824101

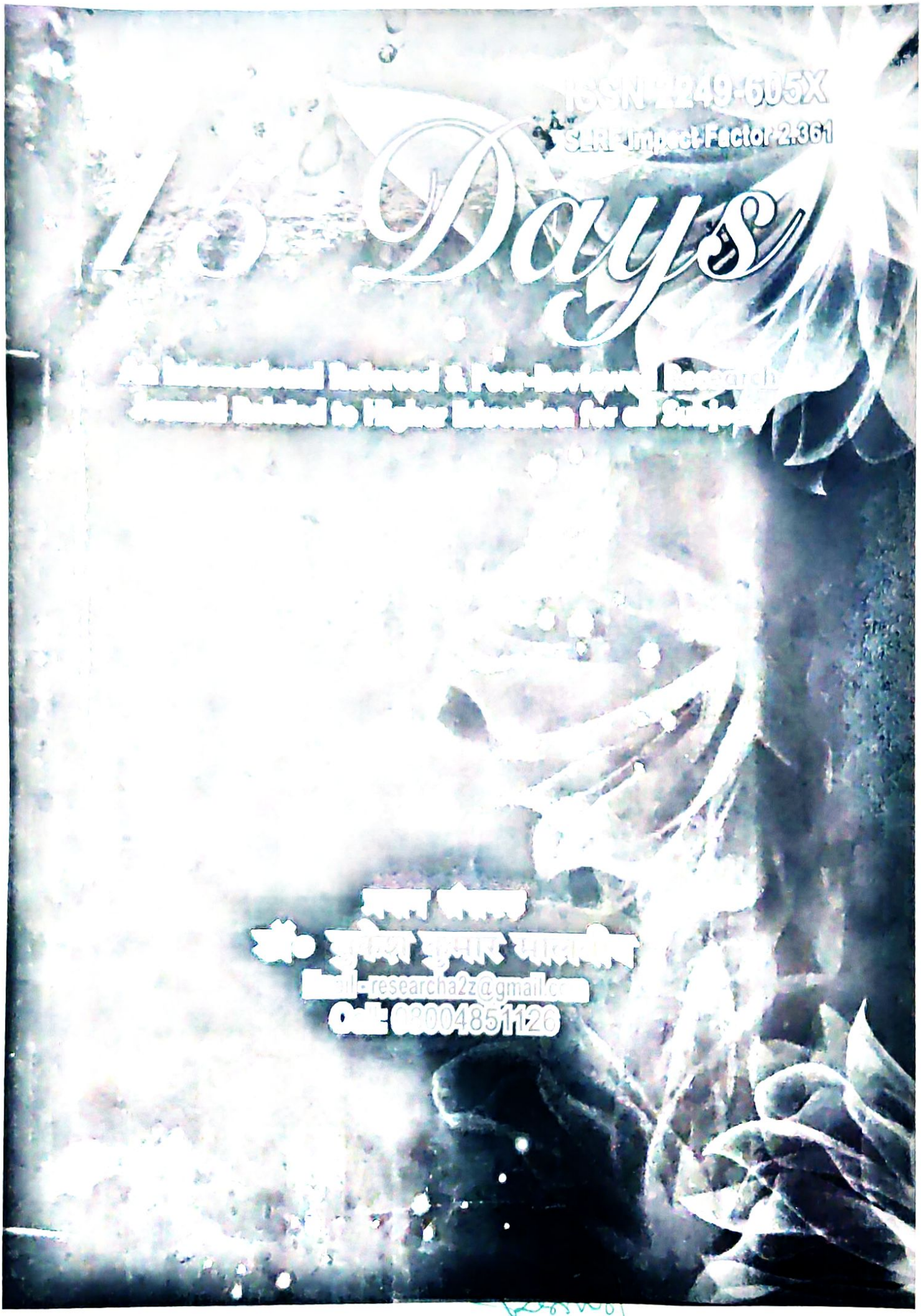

ISSN 2249-605X
[illegible] Impact Factor 2.361

15 Days

[illegible] Research
[illegible] Subjects

[illegible] कुमार [illegible]
Email - researcha2z@gmail.com
Call: 08004851126

Pri...
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA...
Bignanikanagar yari Anandpura Road

UGC Approved No.63423, SLRF Impact Factor: 2.361, ISSN 2249-605X

15Days

An International Research Refereed Journal Related to Higher Education for all Subject. Vol.155 Jan.2018

EDITOR IN CHIEF

MUKESH KUMAR MALVIYA
ASST. PROFESSOR
LAW SCHOOL, BHU, VARANASI (U. P.)
MO. +91-8004851126

SPECIAL MEMBER OF ADMINISTRATION

SHRI SHYAM BABU PATEL DEPUTY REGISTRAR & CAO (SSH) BANARAS HINDU UNIVERSITY VARANASI

MEMBERS OF EDITORIAL BOARD

DR. MONA PUROHIT HOD, LAW DEPARTMENT, BU, BHOPAL.
DR. ARCHANA RANKA HOD , SCHOOL OF LAW, DAVV, INDORE.
SHRI P.P.SINSH, HOD, LAW DEPARTMENT, DR.HSGVV SAGAR.
DR.AMRENDRA KUMAR MISHRA HOD, LAW DEPARTMENT, DDU GORAKHPUR.
DR. SHEPHALI YADAV HOD, LAW DEPARTMENT, MJPRV, BAREILLY.
DR. VANI BHUSHAN FORMER HOD, PG DEPARTMENT OF LAW, UNIVERSITY OF PATNA.
DR. J.K.JAIN PRINCIPAL NEW GOVT. LAW COLLEGE, INDORE.
DR. R.K. MURALI ASSO. PROFESSOR, LAW SCHOOL, BHU, VARANASI.
DR. AHMED NASEEM, ASST. PROFESSOR, LAW DEPARTMENT, DDU, GORAKHPUR.
SHRI ROSHAN LAL ASST. PROFESSOR, LAW DEPARTMENT, UNIVERSITY OF ALLAHABAD.

PATRON

PROFESSOR SUKHPAL SINGH
VICE CHANCELLOR, HIDAYATULLAH NATIONAL LAW UNIVERSITY, RAIPUR.

SPECIAL RESEARCH SCHOLARS EDI. BOARD

PRIYANKA VAIDYA ASSISTANT PROFESSOR GOVT. P. G. COLLEGE NALAGARH DISTT. SOLAN (H. P.)
SHRI RANA NAVNEET ROY JUNIOR RESEARCH FELLOW, LAW SCHOOL, BHU, VARANASI.

EDITORIAL ADVISORY BOARD

DR. SANTOSH KUMAR TIWARI ASST. PROFESSOR LAW FACULTY, NGB UNIVERSITY, ALLAHABAD.
DR. JADHAV SUNIL GULAB SINGH, ASST. PROFE, YASHVANT COLLEGE, NADED, (MH).
DR. SAMTA JAIN ASST.PROFESSOR (ECONOMICS), MATA GUJARI WOMENS COLLEGE, JABALPUR.
DR. AMIT KUMAR PANDEY HINDI DEPARTMENT, BHU VARANASI.
DR. DEEPAK SHARMA ASST. PROFESSOR PKR JAIN COLLEGE OF EDUCATION, AMBALA CITY.
DR. SHARAD DHAR SHARMA SENIER RESEARCH ASSOCIAT BHU VARANASI.
DR.SURENDRA PANDEY, DEPARTMENT OF HINDI, BHU VARANASI.
SHRI SUNIL KUMAR LAW SCHOOL, BHU, VARANASI.
SHRI DILIP KUMAR ASST. PROFESSOR, LAW FACULTY, NGB UNIVERSITY, ALLAHABAD.
KOMAL PRASAD YADAV ASST. PROFESSOR, LAW FACULTY, NGB UNIVERSITY, ALLAHABAD.
KU. ANIMA SHUKLA ANUSHRI COLLEGE OF NURSING, JABALPUR.

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

CONTENTS

1.	AN EXHAUSTIVE STUDY ON THE SKILL DEVELOPMENT FOR SURE SUCCESS THOUGH SELF DEVELOPMENT -A GUIDE TO ACHIEVE A DREAM JOB AND TO STRENGTHEN THE CAREER *Prof. Dr. V. Sundaresan	1–8
2.	THEORY OF PUNISHMENT AND SENTENCING *Parvati Rana	9–11
3.	Corporate Governance and Corporate Social Responsibility *Dr. Krishna Mukund	12–20
4.	भारत में धर्म की राजनीति *पूजा राय	21–25
5.	पर्यावरण एवं जनसंख्या *नीलम कुरील	26–28
6.	राँची नगर के उराँव जनजाति की सामाजिक–आर्थिक में परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। *डॉ0 गंगा केवट	29–31
7.	भारत में अनुसूचित जाति और सामाजिक न्याय की प्रासंगिकता *डा0 अमिता रानी	32–45
8.	भारत में परिवार के बदलते स्वरूप *डा0 आनन्द तनुजा	46–49
9.	राजस्थान में महिलाओं की सहभागिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा स्थिति एवं राजस्थान में सामाजिक चेतना *डॉ. सुमित्रा देवी शर्मा	50–56
10.	शिक्षा और समाज पर तकनीक का प्रभाव *डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे	57–59
11.	हिन्दुस्तानी सभ्यता –सर्वोच्च सभ्यता *वीणा शुक्ला	60–61

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikenagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

शिक्षा और समाज पर तकनीक का प्रभाव

*डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बी०एड० विभाग कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के, जौनपुर

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह प्राकृतिक शक्तियों को अपने वशीभूत करके अच्छे प्रभावों से लाभान्वित होता तथा बुरे प्रभावों से बचने का प्रयास करता रहता है। अपने इस कार्य–सिद्धि के लिए मानव ने विज्ञान का सहारा लिया है। इसी के द्वारा वह अपने जीविकोपार्जन के साधनों को नियंत्रित करता है तथा सामाजिक संबंधों और अपने बौद्धिक विकास को व्यक्त करता है। आज का वर्तमान समाज तकनीकी ज्ञान से ओत–प्रोत है। जिसका प्रभाव मनुष्य के लगभग सभी पहलुओं पर पड़ा है। यही कारण है कि आज हमारी सामाजिक व्यवस्था भी काफी हद तक बदल सी गई है। साथ ही साथ तकनीक के आ जाने से शिक्षा का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ है। जहाँ शिक्षा प्राचीन काल में केवल औपचारिक तथा अनौपचारिक रूप में प्राप्त होती थी, वहीं आज तकनीक ने एक नये विधा को जन्म दिया है जिसे निरौपचारिक शिक्षा कही जा सकती है। जो वर्तमान समय में लगभग आधी शिक्षित आबादी को अपने से जोड़ रखी है।

शिक्षा : शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ होता है।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष् धातु में 'अ' प्रत्यय लगने से बना है। जिसका अर्थ है–सीखना और सीखाना। शिक्षा को अंग्रेजी में 'एजुकेशन' शब्द से नवाजा गया है जो लैटिन भाषा के एजूकेटम (म्कनबंजपवद) शब्द से बना है। म्कनबंजपवद दो शब्दों से मिलकर बना है–

E+Duco. E का अर्थ है 'out of' और 'Duco' का अर्थ है– 'To lead forth or to extract out'। अतः एजुकेशन का अर्थ है–बच्चे की आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करना।

प्रयोग की दृष्टि से शिक्षा शब्द का प्रयोग दो रूपों में होता है–एक प्रक्रिया के रूप में और दूसरा प्रक्रिया के परिणाम रूप में। जब हम कहते है कि उसकी शिक्षा सुचारू रूप से चल रही है तो यहाँ शिक्षा शब्द का प्रयोग प्रक्रिया रूप में है और जब हम यह कहते है कि उसने शिक्षा प्राप्त किया है तो यहां शिक्षा शब्द का प्रयोग परिणाम रूप में है। शिक्षा प्रक्रिया के स्वरूप की व्याख्या करने में मुख्य भूमिका दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों, राजनीतिशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों, मनौवैज्ञानिकों और वैज्ञानिकों ने अदा की है इन सबने शिक्षा को अपने–अपने दृष्टिकोण से परखा और परिभाषित किया है।

जगतगुरू शंकराचार्य की दृष्टि से : "सः विद्या या विमुक्तये, शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाए।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार–"मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।"

महात्मा गाँधी के अनुसार–"शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।"

पेस्टालॉजी के अनुसार–"शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरस और प्रगतिशील विकास है।"

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि–शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। इस प्रकार उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते हैं।

समाज (Society) : सामान्य रूप से व्यक्तियों के समूह को समाज कहते हैं। मानवशास्त्र में मनुष्यों के किसी भी समूह को समाज की संज्ञा दी जाती है। यहां तक कि आदिम मानवीय समुदाय को भी समाज कहा जाता है।

भूगोल के क्षेत्र में समान सभ्यता वाले लोगों के समुदाय को समाज कहते हैं जैसे–भारतीय समाज, यूरोपीय समाज। धर्मशास्त्र में धर्म विशेष को मानने वालो के समुदाय को समाज कहते हैं; जैसे–हिन्दू समाज, इसाई समाज, जैन समाज, बौद्ध समाज और मुसलमान समाज आदि। समाजशास्त्रीय अर्थ में व्यक्तियों के समूह को समाज नहीं कहते अपितु व्यक्तियों में पाये जाने वाले सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्था अथवा जाल को समाज कहते हैं। सभी समाजशास्त्री समाज को अमूर्त मानते हैं। इसकी कुछ प्रमुख परिभाषाएं निम्न है–

टालकॉट पार्सन्स के अनुसार :

समाज को उन मानवीय सम्बन्धों की पूर्ण जटिलता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जो साधन तथा साध्य के सम्बन्ध द्वारा क्रिया करने से उत्पन्न होते हैं। वे चाहे वास्तविक हो अथवा प्रतीकात्मक।

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार :"समाज रीतियों एवं कार्य प्रणालियों की, अधिकार तथा पारस्परिक सहयोग की, अनेक समूहों तथा विभागों की मानव व्यवहार के नियन्त्रण और स्वतन्त्रताओं की एक व्यवस्था है। इस सतत् परिवर्तनशील व्यवस्था को हम समाज कहते है।"

तकनीक (Technology) : सामान्यतः तकनीक का अर्थ उपकरणों एवं यन्त्रों से लगाया जाता है। लोगों की यह धारणा सर्वथा भ्रामक है। उपकारणों एवं यन्त्रों का प्रयोग तो मनुष्य अपनी शक्ति के द्वारा करता है। अतः तकनीक वह व्यवस्थित ज्ञान या कुशलता है, जिसकी सहायता से उपकरणों एवं यन्त्रों का प्रयोग भली–भांति किया जाता है। कार्ल मार्क्स ने कहा है– "तकनीक मनुष्य के

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

द्वारा प्रकृति के साथ व्यवहार करने के प्रकार को व्यक्त करती है। यह उत्पादन की वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य अपना जीवन धारण करता है और जिसे वह अपने सामाजिक सम्बन्धो की संरचना के प्रकारों एवं उनसे उत्पन्न होने वाली बौद्धिक धारणाओं को प्रकट करता है।

अतएव हम यह कह सकते हैं कि तकनीक वह विशेष ज्ञान है जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीविकोपार्जन, सुविधा तथा अन्य साधनों का उपकरण तथा यन्त्र के रूप में उपयोग करता है और प्राकृतिक वातावरण पर प्रभाव स्थापित करता है। इस प्रकार वह अपने बौद्धिक क्षमता को व्यक्त करता है तथा प्राकृतिक शक्तियों पर अधिकार पाता है।

हम अपने जीवन को अधिक सुखमय एवं सुविधापूर्ण बनाने के लिए ही तकनीक का प्रयोग करते हैं। आज ऐसी–ऐसी मशीनों का इजाद हो रही है जिसमें मेहनत कम लगता है, व्यय कम लगता है और परिणाम बेहतर प्राप्त होता है तथा समय की बचत के कारण अवकाश भी अधिक मिलता है।

शिक्षा पर तकनीक का प्रभाव (Impact of Technology on Education) : शिक्षा जगत में तकनीक का प्रयोग सर्वप्रथम 1926 में अमेरिका में सिडनी–एल–प्रेसी ने ओहियों राज्य विश्वविद्यालय में शिक्षण मशीन के निर्माण द्वारा आरम्भ किया। इसके पश्चात 1930–40 के दशक में लुम्सडेन तथ ग्लेसर नामक तकनीक वेत्ताओं ने शिक्षा के यन्त्रीकरण करने का प्रयत्न किया। वर्तमान समय में अनेक प्रकार की तकनीकियों का विकास किया जा चुका है, जिनका प्रयोग शिक्षा को और अधिक सशक्त एवं प्रभावशाली बनाने में किया जा रहा है। इसी का प्रभाव है कि आज विश्व की इतनी विशालयकाय जनसंख्या को शिक्षा सुलभ हो पा रही है। तकनीक ने शिक्षा के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है चाहे वह शिक्षा का लक्ष्य हो, शिक्षण विधि हो, शिक्षण सहायक सामग्री हो या शिक्षा की गुणवत्ता हो। अत: शिक्षा पर तकनीक के कुछ प्रमुख प्रभाव इस तरह देखे गये हैं–

1. **शिक्षा के लक्ष्य में परिवर्तन :** प्राचीन काल में शिक्षा के जो लक्ष्य थे वे आज नही रह गये हैं। शिक्षा के लक्ष्य में आज बहुत परिवर्तन हुआ है। पहले शिक्षा का लक्ष्य आध्यात्मिक उन्नति, सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षण एवं हस्तान्तरण, मोक्ष की प्राप्ति आदि था परन्तु वर्तमान समय में शिक्षा का लक्ष्य भौतिकवादी हो गया है। वर्तमान समाज भौतिक सम्पन्नता और आध्यात्मिक विपन्नता की ओर उन्मुख हो गया है। आज समाज में वैज्ञानिक उन्नति हो रही है। मशीनों, उपकरणों की संख्या दिनो–दिन बढ़ती जा रही है। जिस शिक्षा में व्यक्ति को समृद्धि एवं भौतिक सम्पन्नता की प्राप्ति नही दिखाई दे रही है उस शिक्षा को व्यर्थ माना जाने लगा है।

2. **विभिन्न वैज्ञानिक उपकरण :** तकनीक प्रगति के परिणामस्वरूप अनेक शिक्षण सहायक उपकरणों का आविष्कार किया जा रहा है, जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अकल्पनीय परिवर्तन हुआ है। आज श्रव्य–दृश्य सहायक सामग्री से शिक्षा को प्रभावशाली बनाया जा रहा है। शिक्षण प्रक्रिया में रेडियो, टेप रिकार्डर, ग्रामोफोन, मानचित्र मॉडल, ओ.एच.पी. स्लाइड, फिल्म प्रोजेक्टर बुलेटिन बोर्ड आदि का प्रयोग अधिकता से किया जा रहा है। जिसका परिणाम है कि वर्तमान समय में इसकी सहायता से कम समय तथा कम खर्च करके अधिक से अधिक लोगों तक शिक्षा पहुँचायी जा रही है। तकनीक की ही देन है कि आज छात्र घर बैठे–बैठे दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अपनी शिक्षा को पूर्ण कर रहे है।

3. **सामाजिक शिक्षा पर तकनीक का प्रभाव :** तकनीक का प्रभाव हमारे परिवार एवं सामाजिक शिक्षा पर भी पड़ा है। परिवार के सभी सदस्य किसी न किसी एक व्यवसाय में लगे हुए हैं। लोग अपने व्यवसाय की ओर जितना ध्यान दे रहे हैं उतना परिवार के सदस्यों पर नहीं, जिसके कारण लोगों में पारस्परिक प्रेम, सद्भावना और सहयोग की कमी हुई है।

अतएव हम कह सकते हैं कि तकनीक एवं औद्योगीकरण का प्रभाव परिवार पर भी पड़ा है। बच्चों को पहले जो शिक्षा परिवार में मिलती थी, अब सम्मिलित परिवार प्रथा समाप्त हो जाने के कारण नहीं मिल पा रही है। अर्थात् बालक में नैतिकता एवं समाजीकरण का अभाव सा हो गया है।

समाज पर तकनीकी का प्रभाव : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य जिस समाज के बीच जन्म लेता है उसमें रहता है उसे उस समाज की भाषा; रहन–सहन, खान–पान आचरण की विधियाँ और रीति–रिवाज आदि सीखने होते हैं। बिना ये सब सीखे वह उस समाज में समायोजन नहीं कर सकता। उसका सदस्य नहीं बन सकता। वह ये सभी कार्य एक दिन में नहीं सीखता, इसमें उसे बहुत समय लगता है।

आज का समाज तकनीकी ज्ञान से ओतप्रोत है। इसका प्रभाव मनुष्य के जीवन के लगभग सभी पक्षों पर पड़ा है। यही कारण है कि आज हमारी सामाजिक व्यवस्था बिल्कुल बदल सी गई है। वेवलेन ने लिखा है, कि सामाजिक विघटन केवल टेक्नोलॉजी के कारण हो रहा है। आगबर्न ने रेडियो का प्रभाव 150 रूपों में दिखाते हुए यह सिद्ध किया है कि तकनीक का ऐसा विश्वव्यापी प्रभाव है कि उससे जीवन ही बदल गया है। यह प्रभाव उन देशों में और भी अधिक देखने को मिल रहा है जिन देशों में तकनीकी प्रगति अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई है।

परिवार पर प्रभाव : तकनीक के प्रभाव ने पारिवारिक ढांचे को बहुत अधिक खण्डित किया है। आज हमारे सामने परिवार का जो संगठन दिखाई दे रहा है वह पहले जैसा नहीं है, उसका अस्तित्व केवल कथन मात्र शेष रह गया है। छोटे बच्चों का पालन–पोषण नर्सरी स्कूलों में हो रहा है, माताएं अपनी उत्तरदायित्व से दूर होती जा रही है। बच्चों को माता–पिता एवं परिवार का प्यार एवं संस्कार नहीं मिल पा रहा है। जिससे बच्चे कुंठित होते जा रहे है।

धार्मिक संस्थाओं पर तकनीक का प्रभाव :

धार्मिक संस्थाओं जैसे–मंदिर, मस्जिद और गिरजाघरों आदि पर भी तकनीक का प्रभाव पड़ा है। लोगों के मन से आध्यात्मिक विश्वास अब दूर होता जा रहा है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति के लोग ईश्वर को मानते ही नहीं है और तर्क देते हैं कि आधुनिकता के दौर में इसे यांत्रिक माना जाने लगा है। इसलिए धार्मिक संस्थाओं का क्षरण होने लगा है। पहले चन्द्रमा को विश्वास

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar ...

का देवता माना जाता था, जिसका अब पर्दाफाश कर दिया गया है। वह कोई देवता नहीं है, वहां अमृत का समुद्र नहीं है, वहां केवल ऊँचे–ऊँचे नुकीले पहाड़, गड्ढे, पत्थर तथा रेत के कण मात्र हैं। मनुष्य अब मंगल तथा अन्य ग्रहों पर भी चढ़ाई करने लगा है।

तकनीक के कुछ अन्य प्रभाव

तकनीक का ही प्रभाव है कि व्यक्ति आज प्रत्येक कार्य समय से करना चाहता है। यदि कार्य में देरी होती है तो उसकी महत्ता समाप्त हो जाती है। यही कारण है कि समाज में एकता, अपनापन और घनिष्टता एवं सहयोग की भावना में कमी आयी है। तकनीक के कारण नगरीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। जिसके कारण अनेक प्रकार के रोगों एवं अपराधों की संख्या में इजाफा हुआ है।

आज के युग में धन ही सब कुछ होता जा रहा है। धन प्राप्त करने के लिए उद्योग–धन्धे लगाये जा रहे हैं। पति–पत्नी दोनों ही नौकरी करके धन कमाना चाहते हैं। बच्चों की देखरेख हेतु शिशु परिचर्या खुल रहे हैं, नर्सरी स्कूल, डे बोर्डिंग, स्कूल खोले जा रहे हैं। परन्तु वहां उनकी उतनी तन्मयता से देखभाल एवं विकास नहीं हो पाता है, जितनी घर पर माताओं के द्वारा होता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि आज आधुनिक तकनीक का प्रभाव हमारे पुरे समाज, जीवन शैली, रहन–सहन तथा शिक्षा की रूपरेखा, शिक्षा के पाठ्यक्रम, उद्देश्य आदि पर अत्यधिक दृढ़ता के साथ पड़ा है हमें तथा आपको इस तकनीक के सहयोग से शिक्षा एवं समाज को प्रगति के पथ की ओर उन्मुख करने में सहयोग करना चाहिए न कि अवनति की ओर।

संदर्भ

1.शरतेन्दु, सत्य नारायण दूबे : शिक्षा की नवीन दार्शनिक पृष्ठभूमि, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2009 2.लाल, रमन बिहारी : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ 3.शर्मा, आर0ए0 : शिक्षण तकनीकी, विनय रखेजा, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ 4.कुलश्रेष्ट, एस0 पी0: अग्रवाल पब्लिकेशन हाउस, मेरठ 5.शुक्ला, सी–एस : शिक्षा के समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिक आधार, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद। 6.उपाध्याय, राजेश्वर, एवं डॉ0 सरला पाण्डेय : शैक्षिक टेक्नोलॉजी के आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी 7.पाण्डेय, के0 पी0 : शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी 8.तोमर, गजेन्द्र सिंह : शैक्षिक तकनीकी के मूल तत्व एवं प्रबन्धन, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, शिवाली रोड, मेरठ

●●●●●

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Vol. XVIII
Number 1

ISSN 2319-7129
(Special Issue) February, 2018

EDU WORLD

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

ISSN : 2319-7129

EDU WORLD

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. XVIII, Number - 1 February, 2018

(*Special Issue*)

Chief Editor

Dr. S. Sabu

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O., Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor

S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation

4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

CONTENTS

Cultural Diversity in South Asia: Challenges and Prospects 1
Dr. Amandeep Kaur

Preferential Policy: Concept, Debates and Contestation in China. 7
Chandra Sen

The Role of Civil Societies in Promoting Good Governance in Bangladesh 16
Minati Kalo

Conversion of Waste into Energy : A Case Study of Qatar 25
Sonal Kumari

Corruption and its Challenges to the Governance in China 29
Sumanta Kumar Sahu

Women's Educational Policies During Soviet a Period : Historical Analysis 39
Dr. Mahashraddha Yadav

History in Transition: A Reflection on Women's Educational Attainment in Soviet Union 50
Dr. Mahashraddha

Engaging in the Field Work: A Fieldworker's Note on Methodological Exploration on Education and Women's Empowerment 56
Dr. Shashwat Kumar

Contesting Terrain of Marginality in Education: A Study of Women Empowerment and Education in Pratapgarh, Uttar Pradesh 61
Dr. Shashwat Kumar

Special Economic Zones-An In-Depth Analysis of SEZ distribution 68
Dr. Sonu Kumar Mishra

Water Security Challenges in North Eastern Part of India on Sharing Trans-Boundary River of Brahmaputra Between India and China 76
Md. Najibullah Singakhongbam and Hena Bari

Yogic Management of Diabetes 84
Dr. R. Lakshminarayana

India' Act East Policy: A Study of Mekong-Ganga Cooperation 90
Himanshu

Responsible Wildlife Tourism: A Theoretical Review 98
Mahender Reddy Gavinolla and Prof. Sampada Kumar Swain

अशोक द्वारा नियुक्त 'धर्ममहामात्र एक प्रदेयः विश्लेषणात्मक समीक्षा 194
डॉ. सोनी कुमारी

डॉ.- राही मासूम रजा के कृतित्व का सामान्य परिचय 198
डॉ. तब्बसुम खान

वैश्विक शान्ति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता 208
डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और आदिवासी 215
डॉ. तुंगनाथ मौआर

बिहार में महिला सशक्तिकरण में पंचायती राज की भूमिका 224
डॉ. पूनम कुमारी

NITI Aayog (National Institution for Transforming India) 229
Dr. Poonam Kumari

Women Empowerment in Present Scenario 233
Dr. Poonam Kumari

A Trend of Intra-Industry Trade: A Sino-Indian Case Study 238
Madhurendra Singh

Taxation System in India 243
Madhurendra Singh

E-Banking 255
डॉ. पीयूष कुमार गुप्ता

राजनैतिक कारण और बाल अपराध 264
डॉ. तन्द्रा शरण

बाल अपराधी या बालापचार बच्चों का माता-पिता के साथ सम्बन्ध 267
डॉ. तन्द्रा शरण

प्रेमचंद के कथा-साहित्य में शिक्षा पद्धति की पड़ताल 270
डॉ. अनिल शर्मा

Investigation of Psychological Factors Underlying Peptic Ulcer 274
Dr. Nishi Bijiya

Synthesis of Imine Bond Containing Insoluble Polymeric Ligand and its Transition Metal Complexes, Structural Characterization and Catalytic Activity on Esterification Reaction 280
Dr. Prabhakar Kumar

वैश्विक शान्ति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता

डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे*

भूमिका

व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का ह्रास वैश्विक अशांति का प्रमुख कारण है। आधुनिक युग में शिक्षा आध्यात्मिक व नैतिक विकास प्रक्रिया के स्थान पर आर्थिक विकास की प्रक्रिया बन गयी है। शिक्षा के उद्देश्यो में आर्थिक विकास को प्रमुख स्थान दिया जा रहा है। पाठ्यक्रम में केवल वैज्ञानिक व तकनीकी शिक्षा को ही प्रधानता दी जा रही है तथा अध्यात्म, धर्म व नैतिकता को महत्व नहीं दिया जा रहा है जिसके कारण लोगो में अनुशासनहीनता एवं असन्तोष की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वर्तमान वैश्विक परिवेश में नैतिकता व मानवीयता का ह्रास हुआ है। आधुनिक भौतिकवादी युग में मानव ने मानसिक शान्ति ,परस्पर सद्भाव तथा एकाग्रता को खो दिया है जिसके कारण धार्मिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों में ह्रास हो रहा है।

आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी युग में एक ओर जहाँ मनुष्य के सुख– सुविधाओं में वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर आणविक बमों के आविष्कार ने सम्पूर्ण मानव के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। विकास की इस तीव्र आँधी ने जहाँ जीवन के अधिकांश मानवीय मूल्यों, आस्थाओं और प्रतीकों पर प्रहार किया है, वहीं दूसरी तरफ सम्पूर्ण पीढ़ी को परम्परा व आधुनिकता , जड़ता एवं गतिमयता के द्वन्द्व में भटकने के लिए छोड़ दिया है। लोगों में मानवीय , आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्य समाप्त हो रहा है और भौतिकवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है परिणामस्वरूप मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है।

आज व्यक्ति के जीवन में भौतिक सुख–सुविधा एवं समृद्धि के नाम पर बहुत कुछ है, ज्ञान एवं कौशल की कमी नहीं है इसके बावजूद भी चारो तरफ अशान्ति, अराजकता एवं आतंकवाद का साम्राज्य व्याप्त है। मनुष्य, मनुष्य से ही भयभीत होने लगा है तथा लोगों का एक दूसरे पर विश्वास नहीं रह गया है। यदि गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि वर्तमान सामाजिक परिवेश की सभी समस्याओं की जड़ नैतिक मूल्य शिक्षा विहीन शिक्षा प्रणाली ही है। पहले शिक्षा का उद्देश्य मुक्ति होती थी, चरित्र निर्माण होता था किन्तु आज मुक्ति, आध्यात्मिकता एवं चरित्र निर्माण की बात करना लोग अप्रासंगिक मान रहे हैं। वर्तमान समय में मनुष्य अपनी उन नैतिक मूल्यों से विमुख हो रहे हैं जिसे अंगीकरण करने पर न केवल अपना कल्याण अपितु पीड़ित मानवता को भी शान्ति प्रदान की जा सकती है। नैतिक मूल्यों के अभाव में आज के छात्र एवं शिक्षक अनैतिक गतिविधियों में लिप्त है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

विद्यालयों में हम छात्रों को विविध विषयों का ज्ञान प्रदान करते हैं किन्तु बालकों की आदतों, उनके व्यवहार, उनके आचरण, उनके स्वभाव आदि के परिमार्जन के लिए हम कोई उपाय नहीं करते। हमारा वर्तमान

*प्रवक्ता बी0एड0 कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के जौनपुर

व्यवस्था नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों की जानकारी ठीक से प्रदान नहीं करता। अतः वैश्विक शान्ति के लिए नैतिक मूल्यों की शिक्षा की प्रत्येक जागरूक नागरिक को आवश्यकता प्रतीत होती है।

औद्योगीकरण ने परिवार के एवं समाज के ढाँचे में परिवर्तन कर दिया है। अतः अब नैतिक मूल्यों की शिक्षा का दायित्व केवल घर या समाज पर ही नहीं छोड़ा जा सकता। विज्ञान की प्रगति ने हमारे चारों ओर के वातावरण में परिवर्तन कर दिया है। जनतन्त्र ने सामाजिक आकांक्षाओं में भी परिवर्तन कर दिया है। आज के युवाओं में उत्साह है, किन्तु इस उत्साह को उचित दिशा देने में वर्तमान शिक्षा प्रणाली अक्षम है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि हमारे नवयुवकों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा किसी स्तर पर नहीं दी जाती। नये परिवेश में नैतिक मूल्यों की शिक्षा और आवश्यक हो गई है।

नैतिक मूल्यों की शिक्षा किसी राष्ट्र के लिए ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए महत्वपूर्ण है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने से बालकों में सहिष्णुता, उदारता, सहयोग, समता, त्याग, संयम, विश्व–बन्धुत्व इत्यादि गुणों का विकास किया जा सकता है। वैश्विक शान्ति के लिए बालक का सर्वांगीण विकास आवश्यक है। वैश्विक शान्ति के लिए मानवीयता प्रथम आधार है क्योंकि वैश्विक शान्ति विश्व कल्याण के लिए है और विश्व कल्याण के लिए मानवीयता व मानव मात्र का कल्याण आवश्यक है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा के माध्यम से ही विद्यार्थियों में आत्मानुशासन की प्रवृति का विकास किया जा सकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

नैतिक मूल्यों की अवधारणा का अध्ययन करना।

नैतिक मूल्यों को विकसित करने हेतु उपाय का अध्ययन करना।

वैश्विक शांति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

नैतिक मूल्य की अवधारणा

वे निश्चित मानदण्ड जिसके आधार पर व्यक्ति, वस्तु, व्यवहार व घटना का अच्छा–बुरा,सही–गलत के रूप में परख की जाती है,मूल्य कहलाते हैं। मूल्य ही धर्म कहलाता है अर्थात धर्म उन शाश्वत मूल्यों का नाम है जिनकी मन, वचन, कर्म की सत्य अभिव्यक्ति से ही मनुष्य कहलाता है। धर्म का अभिप्राय मानवोचित आचरण संहिता है। यह आचरण संहिता ही नैतिकता है और इस नैतिकता के मानदण्ड ही नैतिक मूल्य हैं। नैतिक मूल्यों के अभाव में कोई भी व्यक्ति, समाज या देश निश्चित रूप से पतनोन्मुख हो जायेगा। नैतिक मूल्य मनुष्य के विवेक में स्थित, आन्तरिक व अन्तः स्फूर्त तत्व हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में आधार का कार्य करते हैं। नैतिक मूल्यों के कारण ही समाज में संगठनकारी शक्तियाँ व प्रक्रिया गति प्राप्त करती है और विघटनकारी शक्तियों का क्षय होता है विश्वबन्धुत्व की भावना, मानवतावाद, समता भाव, प्रेम और त्याग जैसे नैतिक गुणों के अभाव में विश्वशांति , अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, मैत्री आदि की कल्पना भी नहीं की सकती है।

हरबर्ट. जैसे शिक्षाशास्त्री तो सम्पूर्ण शिक्षा का उद्देश्य ही नैतिकता का विकास मानते हैं। यदि पढ़–लिखकर बालक सच्चरित्र न बन सका तो शिक्षा बेकार है। छात्र में अनुशासन , सत्यवादिता, सहयोग, भ्रातृत्व, धैर्य आदि गुणो का विकास नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा सम्भव है। परिवार, समाज, संस्कृति, राजनैतिक संस्थाओं

के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास, शुभ एवं भद्र के लिए श्रद्धाभाव का विकास एवं अन्याय, द्वेष, विशेषाधि
कार, दबाव आदि के विरोध का साहस नैतिक शिक्षा से ही सम्भव है।

नैतिक मूल्यों के प्रकार

प्रमुख नैतिक मूल्य निम्नलिखित है–

सत्य

वैश्विक शान्ति हेतु सत्य एक प्रमुख नैतिक मूल्य है। संसार में सत्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। आज लोगों में सत्य से दूर रहने की प्रवृत्ति है। यदि सत्य पर अडिग रहा जाय तो शान्ति सम्भव है। असत्य के मार्ग पर चलने के कारण ही लोगों का जीवन तनावग्रस्त है। प्राचीन समय में लोगों में यह विश्वास रहता था कि सत्य ही ईश्वर है। सत्य का तात्पर्य केवल सच बोलना ही नहीं वरन् विचार, वाणी और आचार में भी सत्य होना आवश्यक है। सत्य का अनुपालन धर्म, राजनीति, समाज एवं परिवार सर्वत्र होना चाहिए। व्यक्ति जब तक काम, क्रोध, लोभ, मोह के प्रभाव में रहेगा, वह सत्य का दर्शन नहीं कर सकता। जो स्वयं नैतिक रूप से शक्तिमान होता है, वही सत्य मार्ग पर चल सकता है।

अहिंसा

वैश्विक अशान्ति के प्रमुख कारणों में लोगों में व्याप्त हिंसा की प्रवृत्ति भी है। आज लोग छोटी–छोटी बातों पर भी हिंसा का मार्ग अपना लेते हैं जो विद्रोह का प्रमुख कारण बन जाती है। वैश्विक शान्ति की स्थापना के लिए अहिंसा रूपी नैतिक मूल्य को प्रमुख रूप से ग्रहण करना होगा। प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों, उपनिषदों, एवं मनुस्मृति आदि के अनुसार अहिंसा का अर्थ साधारणतः किसी प्राणी को कष्ट नहीं पहुँचाना एवं किसी का प्राण नहीं लेना है। जैन मत के अनुसार "सभी परिस्थितियों में सभी प्राणियों के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा हिंसा का वर्जन है।"

अहिंसा के बारे में महात्मा गाँधी जी का विचार था कि "यदि अहिंसा के पुजारी की सभी क्रियाओं के मूल में करूणा रहे, यदि वह क्षुद्र जीव को यथाशक्ति कष्ट पहुँचाने से बचता रहे और उसे बचाता रहे तथा इस प्रकार हिंसा के चक्कर से निरंतर दूर रहे तो फिर उसका विश्वास अहिंसा में अडिग हो जायेगा।" शत्रुओं से प्यार, बुराई के बदले भलाई और घृणा के बदले प्यार करने की भावना गाँधी जी के अहिंसा की कल्पना का तत्व था। उनकी अन्तर्दृष्टि थी कि यदि हम सत्य स्वरूप ईश्वर को पाना चाहते हैं तो हमें इसके लिए निश्चय ही अहिंसा का मार्ग अपनाना होगा।

प्रेम

वैश्विक शान्ति के लिए प्रेम रूपी नैतिक मूल्य भी अनिवार्यतः धारण करना होगा। हिंसा की प्रवृत्ति प्रेम के अभाव में ही उत्पन्न होती है। यदि हम लोगों के प्रति प्रेम का भाव रखें तो निश्चित ही अन्य लोगों के हमारे प्रति प्रेम का ही भाव रहेगा। आज भाई–भाई में भी सच्चे प्रेम का अभाव है जिसके कारण छोटी–छोटी बातों पर विवाद प्रारम्भ हो जाता है तथा कुछ लोग हिंसा का मार्ग चुन लेते हैं। जब लोगों में आपस में ही प्रेम का भाव नहीं है तो ऐसे लोगों से वैश्विक शान्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

नैतिक मूल्यों में धर्म का भी प्रमुख स्थान है। नैतिकता के लिए धर्म का वही स्थान है, जो जमीन में फसलों के लिए जल का होता है। धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं है तथा यह हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाइयत से परे है। चूंकि विश्व के सभी मानव एक ही ईश्वर की सन्तान है अतः सभी मानव आपस में भाई–भाई हैं। सभी लोगों से नैतिकतापूर्ण व्यवहार करना ही सबसे बड़ा धर्म है। सच्चा धर्म यही शिक्षा देता है कि हमें ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे दूसरे को कष्ट पहुँचे। यदि सभी लोग इस धर्म का पालन करेंगे तो निश्चित रूप से वैश्विक शान्ति की स्थापना होगी।

ईमानदारी

नैतिक मूल्यों में ईमानदारी का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ईमानदारी एक ऐसा माध्यम है जिससे लोगों में विश्वास एक दूसरे पर बना रहता है। हमें अन्दर एवं बाहर दोनों रूप में ईमानदार रहना चाहिए। ईमानदारी से आत्मबल मजबूत होता है। कहा भी गया है "ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है (Honesty is the best Policy.)"

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु पाठ्यक्रम

नैतिक मूल्यों की उपस्थापना भी पाठ्यक्रम के माध्यम से ही सम्भव है। अन्धविश्वासों, संकुचित सिद्धान्त तथा रूढ़िगत धार्मिक व्यापारों से ऊपर उठकर ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण हो जिसमें धर्म के आधारभूत सिद्धान्तों का निरूपण हो। धर्म वह है जो मनुष्य–मनुष्य में मेल स्थापित करता है। भेद, घृणा, वैमनस्य तथा शत्रुता उत्पन्न करने वाले सिद्धान्त कभी भी धर्म की श्रेणी नहीं आ सकते। इसलिए आज के यथार्थवादी युग में शिक्षा के लिए धार्मिक तथा नैतिक मूल्यों का आँचल छोड़ना श्रेयस्कर नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन से पाठ्यक्रम का जो स्वरूप निखरता है, उसमें शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर धर्म तथा संस्कृति, सामाजिक विषयों का अध्ययन, क्षेत्रीय भाषाएँ तथा उनका साहित्य, विज्ञान, वाणिज्य तथा कृषि सम्बन्धी विषयों के अतिरिक्त राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन देने वाले कार्यक्रम, शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन की योजनाएँ, स्थानीय आवशकताओं के अनुरूप शिल्पीय, व्यावसायिक तथा औद्योगिक विषयों का समावेश वांछनीय है। अधिक जीवन्त, उपयोगी, व्यापक तथा सार्थक बनाने के लिए पाठ्यक्रम को इतना लचीला बना दिया जाय कि सहपाठ्यक्रम, पाठ्येतर तथा पाठ्यक्रमीय क्रियाकलापों एवं अध्ययनों का समायोजन अध्यापक परिस्थिति तथा आवशकतानुकूल स्वयं कर सके। परीक्षोन्मुख पाठ्यक्रम एक जड़ एवं मृत भावना है जिसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु उपाय

विद्यार्थियों नैतिक मूल्यों के विकास के लिए नैतिक शिक्षा को भी एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाय और कुछ पुस्तकें निर्धारित कर दी जाय जिनके आधार पर नैतिक मूल्यों की शिक्षा भलीभाँति दी जा सके।

नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर क्रमिक रूप में विकसित करना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर जिन गुणों के विकास पर अत्यधिक बल हो, उनमें माता–पिता, आचार्य एवं अपने से बड़ो के प्रति श्रद्धाभाव भी है। यह श्रद्धा एवं आदर ऊपरी एवं दिखावटी न होकर मन से हो। इसके लिए छात्रों को समय–समय पर कुछ नियमों की जानकारी देनी पड़ेगी तथा 'श्रवणकुमार', 'राजा हरिश्चन्द्र' इत्यादि नैतिक मूल्य प्रधाननाटक कक्षा के सम्मुख उपस्थित किया जाय।

माध्यमिक स्तर पर राष्ट्र एवं विश्व के प्रति तथा मानवता के प्रति श्रद्धाभाव जाग्रत करना होगा। इसके लिए देश–प्रेमी, बलिदानी, एवं राष्ट्र–भक्तों की जीवनियाँ पढ़नी होगी। ऐसी कहानियों का चयन करना होगा जिनके आधार पर देश–प्रेम का विकास हो सके। उन घटनाओं पर बल देना होगा जो देश एवं विश्व के कार्यों मे प्रमुख हैं।

उच्च स्तर पर छात्रों में अपने पूर्वार्जित प्रेम एवं श्रद्धा की मीमांसा करनी होगी। संसार के विभिन्न धर्मों मे व्याप्त एकता को ढूँढना होगा। इसके लिए उन्हें बुद्ध, कन्फ्यूशियस, सुकरात, ईसा, शंकर, मुहम्मद, कबीर, नानक, गाँधी, विवेकानंद, अरविन्द, दयानन्द आदि की जीवनियाँ पढ़ाई जायें। संसार के धार्मिक ग्रन्थों में सार्वभौमिक तत्व को छात्र पहचाने। इसके लिए इन ग्रन्थों से चुने हुए अंश को उन्हें पढ़ना होगा। इस स्तर पर यह सिखाया जाय कि वे धर्म के नैतिक मूल्य को समझ सकें। उन्हें धर्म का दर्शन पढ़ाया जाय, धर्म के मान्य एवं आदर्श सिद्धान्तों की व्याख्या उनके समक्ष प्रस्तुत की जाय ताकि वे युगानुरूप सिद्धान्तों को व्यवहृत कर सकें।

आवश्यकता इस बात की है कि विद्यालय का सम्पूर्ण वातावरण नैतिकता से ओत–प्रोत हो जिससे छात्र नैतिक नियमों का पालन कर सकें और नैतिक सिद्धान्तों को व्यवहृत कर सकें।विद्यालय का कार्य कुछ क्षण के मौन से आरम्भ हो जिससे छात्र नैतिक नियमों का मनन करना सीखें। सरल कहानी के माध्यम से नैतिकता की शिक्षा दी जाय।

भारत सरकार के सन् 1959 में बम्बई के तत्कालीन राज्यपाल श्री श्रीप्रकाशजी की अध्यक्षता में नैतिक मूल्यों के शिक्षा की एक समिति नियुक्त की गई थी, जिसके अध्यक्ष के अतिरिक्त अन्य तीन सदस्य थे– राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति श्री जी० सी० चटर्जी, जम्मू–कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री फैजी और भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के संयुक्त सचिव श्री प्रेमकृपाल। इस समिति ने नैतिक मूल्यों की शिक्षा पर विस्तार में विचार किया और अपने अन्य प्रतिवेदनों के अतिरिक्त निम्नलिखित महत्वपूर्ण सुझाव दिये–

1. प्रारम्भिक स्तर

क. सामूहिक गायन के लिए प्रातः कुछ मिनटों के लिए छात्र सभा का आयोजन हो।

ख. भाषा शिक्षण के पाठ्यक्रम में सन्तों एवं धार्मिक नेताओं के जीवन व शिक्षा के विषय में सरल और रोचक कहानियों को सम्मिलित किया जाय।

ग. यथासम्भव श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रयोग करके छात्रों की नैतिक शिक्षा में रुचि जाग्रत की जाए विशेषतः सुन्दर चित्र, फिल्मस्ट्रिप, सुन्दर कलाकृतियों के रंगीन पुनर्मुद्रण, वास्तुकला के नमूने प्रस्तुत किये जाय।

कालांश की समय सारिणी में एक सप्ताह में दो घण्टे नैतिक शिक्षा के लिए रखे जाने चाहिए। इन घण्टों में विश्व के धर्मों की रोचक कहानियाँ कही जाय। धर्म के बाह्य आडम्बर को पृथक रखा जाय।

सेवाकार्यों के माध्यम से छात्रों में 'सेवा की भावना' एवं 'कार्य ही पूजा है' की भावना जाग्रत की जाय।

खेलकूद में आयोजित शारीरिक शिक्षा एवं खेल का उद्देश्य चरित्र निर्माण हो।

प्राथमिक स्तर

प्रातःकालीन सभा में दो मिनट का मौन रखा जाय। इसके बाद पवित्र पुस्तकों या श्रेष्ठ साहित्य से कुछ अंश पढ़े जाय। सामूहिक गायन को भी प्रोत्साहित किया जाय।

इतिहास और सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में विश्व के महान धर्मों की शिक्षाओं के मूलतत्व पढ़े जाय। भाषा शिक्षण या सामान्य शिक्षण में विभिन्न धर्मों के विषय मे कथाएँ सम्मिलित की जाय।

सप्ताह मे एक घण्टा नैतिक मूल्यों की शिक्षा के लिए पृथक से रखा जाय। इस कक्षा में विचार–विमर्श को प्रोत्साहित किया जाय। उपयुक्त वक्ताओं को भी आमंत्रित करके नैतिक शिक्षा पर व्याख्यान कराया जाय।

छुट्टियों मे या विद्यालयी समय के अतिरिक्त संगठित रूप में समाज सेवा की जाए। इस सेवा का उद्देश्य हो–श्रम के प्रति निष्ठा, मानवता से प्रेम, देशभक्ति और आत्मानुशासन।

विद्यालय में छात्र की उपलब्धियों की जाँच करते समय आचरण एवं चरित्र के गुणों की परीक्षा अवश्य हो।

3. विश्वविद्यालयी स्तर

प्रातः विभिन्न समूहों में छात्र मौन–चिन्तन करें। ऐच्छिक रूप से अध्यापकों के निरीक्षण में यह कार्य हो।

'तुलनात्मक धर्म' में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की रचना की जाय और इसे महत्वपूर्ण विषय बनाया जाय।

उपसंहार

उपरोक्त विवरण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वैश्विक शान्ति के लिए नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता अत्यधिक है। यदि सभी व्यक्तियों में नैतिक मूल्यों का समावेश कर दिया जाय तो लोगों में उच्च विचार उत्पन्न होगा। वे आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे, कहीं भी हिंसा का भाव नहीं रहेगा तथा सभी लोगों में स्वार्थ की भावना त्याग कर परमार्थ की भावना जाग्रत होगी। केवल एक व्यक्ति में ही नैतिक मूल्यों का समावेश होने से ही वैश्विक शान्ति सम्भव नहीं है। वैश्विक शान्ति की स्थापना के लिए स्वयं में नैतिक मूल्यों को ग्रहण करने के पश्चात् अन्य लोगों में भी नैतिक मूल्यों का समावेश कराना होगा। यह कार्य वही कर सकता है जो नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हों। यदि हमारे अन्दर नैतिक मूल्यों का अभाव रहेगा तो हम अन्य लोगों में नैतिक मूल्य का विकास नहीं करा सकेंगे। पहले हम स्वयं के अन्दर नैतिक मूल्य धारण करें, उसके पश्चात् अन्य लोगों को नैतिक मूल्य धारण करने हेतु प्रेरित करें तभी वैश्विक शांति की स्थापना होगी जिससे

सम्पूर्ण विश्व में भाईचारा, निःस्वार्थ की भावना, सौहार्द एवं प्रेम का वातावरण विकसित होगा तथा प्रत्येक मानव शान्तिपूर्वक खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकेगा ।

नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा ही वैश्विक शान्ति सम्भव है क्योंकि इसके द्वारा ही व्यक्ति में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, लड़ाई–झगड़े इत्यादि कुप्रवृत्तियों को रोका जा सकता है। यदि सभी जीवों में एक ही ईश्वर की सत्ता है तो मानव जाति में जाति–भेद, रंग–भेद, नस्ल–भेद, लिंग–भेद, ऊँच–नीच भेद अनुचित है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा बालकों में भेद–भाव रहित विश्व–बन्धुत्व की भावना का विकास उत्पन्न करके मानव मात्र की एकता पर बल तथा मानव जाति के अधिकतम कल्याण की प्रवृत्ति का विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गाँधी, महात्मा : 'यंग इण्डिया' 15 मार्च 1926।

गाँधी, मोहन दास करमचन्द (1989) : 'मेरे सपनों का भारत', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

गुप्ता, राम बाबू(1993) : 'महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री' रतन प्रकाशन मन्दिर, आगरा ।

धनकर, रोहित (2004) : 'शिक्षा और समझ' आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला , हरियाणा ।

पाण्डेय रामशकल (2005) : 'शैक्षिक निबंध' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

पाण्डेय, एच0 एल0 (2000) : 'गांधी, नेहरू, टैगोर एवं अम्बेडकर' प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद।

वार्ष्णेय, सोनी : 'नवनीत' फरवरी 2014

Website:- : www.navneethindi.com

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar vari Anandpura Road
Aurangabad Bihar 824101